॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जनवरी, 2015 वर्ष 18, अंक 1 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये
विक्रमी सम्वत् 2071 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये | कुल पृष्ठ 24

नववर्ष का हर्ष कब, कैसे और क्यों

❒ श्री उदयनाचार्य

जनवरी-1 का आगमन होते ही छोटे-बड़े, प्रबुद्ध-सामान्य, स्त्री-पुरुष आदि सभी हर्ष-उल्लास के साथ नये वर्ष के स्वागत की तैयारी करते हैं। नये वर्ष की शुभकामनाओं को ज्ञापित करने हेतु चारों ओर बैनर, बोर्ड आदि लगाये जाते हैं। रंगोली, रंगबिरंगी लाईट, फूल-माला आदियों से अलंकरण किये जाते हैं। रात भर जाग कर पुराने वर्ष का अन्तिम क्षण बीतकर नये वर्ष का आदि क्षण उपस्थित होते ही आबालवृद्ध सभी जन नाच गान, आतिशबाजी, बैण्ड-बाजा आदि ध्वनियों से सभी दिशाओं को गूंजायमान करते हुए नये वर्ष का बड़ा स्वागत करते हैं और अपरिमित आनन्द का अनुभव करते हैं।

हे भारत माता के मानस वीर सपूतों! क्या यह जनवरी 1 नये वर्ष का आरम्भ है? क्या इसी दिन नये वर्ष का आरम्भ होता है? एक बार गम्भीरता से अपनी अन्तरात्मा में विचार करना। इस समय प्रचलित कालेन्द्र=कालान्तर (कैलेण्डर) ईसा से सम्बन्धित है, यह सर्वविदित है। क्या ईसा से पूर्व अपने भारतदेश का चरित्र, परम्परा, संस्कृति नहीं थी? यदि थी तो ईसा से पूर्व के लोग किस दिन नये वर्ष को मनाते रहे होंगे? यह विचार करना होगा, आत्ममन्थन करना होगा। हम यहाँ केवल प्रमुख विषयों के साथ दिग्दर्शन करा रहे हैं। सुधी पाठकवृन्द स्वयं विचार कर निर्णय लें और तथ्य (सत्य) को सबके सामने प्रस्तुत करें।

यूरोप देशों में पहले ओलम्पियन संवत्सर प्रचलित था। वही संवत्सर ईसा से 753 वर्ष पूर्व रोमनों का राज्य स्थापित होने के पश्चात् रोमनों के प्रथम राजा रोमलुस के काल में रोमन संवत्सर के रूप में परिवर्तित हो गया। तब उस संवत्सर के केवल इस मास (मार्च से दिसम्बर तक) और 304 दिन ही थे उन मासों के नाम रोमन देवताओं और महाराजाओं के नाम से रखे गये थे। जैसे कि 'मार्स' इस रोमन युद्ध देवता के नाम से 'मार्च' मास, अट्लस देवता की कुमारियाँ ''मलिका मई और मलिका जौन'' के नामों से क्रमश: 'मई', 'जून' मासों के नाम रखे गये। रोमन सम्राट, 'जूलियस सीजर' एवं उनके पौत्र 'आगस्टस सीजर' के नामों से 'जुलाई' और 'अगस्त' मास प्रचलित किये गये। इस प्रकार प्रथम मास मार्च से छठे मास अगस्त तक के मासों का नामकरण सम्पन्न हुआ। उनके पश्चात् के मास क्रम-बोधक शब्दों से प्रसिद्ध किये गये। जैसे कि सप्तम (सातवां) मास का नाम सेप्टम्बर (September), अष्टम (आठवां) मास का नाम अक्टूबर (October), नवम (नौवां) मास का नाम नवम्बर (November), दशम (दसवाँ) मास का नाम दिसम्बर (December) रखा गया। यहाँ यह ध्यातव्य है कि सेप्टम्बर आदि शब्द सप्तमादि संस्कृत शब्दों के विकृत रूप हैं। सप्तम अम्बर (=नौवां आकाश) से नवम्बर और दशम अम्बर से दिसम्बर (दशम्बर) शब्द बना। सप्तमाम्बर आदि शब्द आकाशस्थ नक्षत्रादियों की विशेष अवस्थाओं के बोधक हैं।

ये मार्च आदि दस मास ही 53 वर्षों तक व्यवहृत होते रहे। ईसा से 700 वर्ष पूर्व रोमनों का द्वितीय राजा ''नूमा पोम्पिलियस (Numa Pompilius)'' ने 'जोनस' नामक रोमन देवता के नाम से जनवरी (January) मास आरम्भ किया, साथ में फरबरी (February) मास को भी आरम्भ किया, जिसका अर्थ है 'प्रायश्चित मास'। पांचवा रोमन सम्राट' एत्रुस्कान ताक्विनियूस प्रिस्कियूस' (Etruscan Tarquinius Priscius 616-579 ईसा पूर्व) ने रोमन रिपब्लिकन् कैलेण्डर मुद्रित किया था, जिसमें जनवरी को प्रथम स्थान दिया गया था। इन दो मासों को दसवें मास दिसम्बर के बाद जोड़ा जाता तो बुद्धिमत्ता का परिचायक होतां परन्तु इन्हें आदि में जोड़ने से सातवां मास सेप्टम्बर नौवां मास हो गया, वैसे ही आठवां मास ओक्टोबर दसवाँ, नौवां मास नवम्बर ग्यारहवां एवं दसवां मास दिसम्बर बारहवां मास हो गया। जिससे सेप्टम्बर (सप्तम अम्बर=सातवां आकाश) आदियों के अर्थ निरर्थक सिद्ध हुए। अंग्रेजी में 'मार्च' का अर्थ है-'गमन-आगमन' अर्थात् पुराना संवत्सर व्यतीत होकर नया संवत्सर आ गया है। यह अर्थ भी जनवरी, फरवरी मासों को आदि में जोड़ने से व्यर्थ हो गया। अज्ञानता एवं अविवेकता के लिए यह एक ज्वलन्त उदाहरण है। साथ में यहां यह भी विचार करना होगा कि फरवरी

हे भारत माता के मानस वीर सपूतों! क्या यह जनवरी 1 नये वर्ष का आरम्भ है? भारतीय प्राचीन परम्परा के अनुसार नया संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आरम्भ होता है। जो कि मार्च के अन्त में या अप्रैल के आदि में आता रहता है।

(शेष पृष्ठ 22 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आर्य समाज (अनारकली) नई दिल्ली

का 90वां वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली का 90वां वार्षिकोत्सव शुक्रवार दिनांक 28 नवम्बर से रविवार 30 नवम्बर 2014 तक आयोजित किया गया।

शुक्रवार 28 नवम्बर 2014 को प्रातःकालीन सत्र में यज्ञ के उपरान्त हंसराज मॉडल स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली के श्री मिथिलेश झा जी द्वारा मधुर भजनों का कार्यक्रम रहा। जिसका सभी उपस्थित आर्य बहिन-भाइयों ने आनन्द लिया। तदुपरान्त विशेष विचार गोष्ठी में दिल्ली एवम् निकतवर्टी क्षेत्रों की प्रधानाचार्यों का विशेष उद्बोधन था। जिसमें सरला चोपड़ा, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल नोएडा की प्रधानाचार्य श्रीमती आई.पी. भाटिया जी ने आर्य समाज का समाज सुधार कार्यक्रम आज के संदर्भ में पर अपने सारगर्भित विचार रखे। अपने जीवन में प्रथम बार श्रीमती भाटिया आर्य समाज के किसी कार्यक्रम में अपना उद्बोधन दे रही थी। लेकिन उनकी विद्वता/उत्साह एवम् आत्मविश्वास इतना अधिक था की सभी ने करतल ध्वनि से उनका आभार व्यक्त किया और उन्होंने अपना उद्बोधन पूर्ण सफलतापूर्वक दिया।

प्रधान श्री पूनम सूरी जी उद्बोधन/आशीर्वाद देते

आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी एवम् डॉ. महेश वेदालंकार जी का अभिनन्दन करते हुए श्री पूनम सूरी जी साथ में श्री अजय सूरी

इसी सत्र में प्रधानाचार्य डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल श्रेष्ठ विहार, श्रीमती प्रेम लता गर्ग ने शिक्षण संस्थान और चरित्र निर्माण विषय पर अपने विचार रखे और उसी अवसर पर आप द्वारा रचित कविता इसी विषय पर जब आप ने प्रस्तुत की तो उपस्थित जनसमूह को आप में छूपी हुई कवयित्री का आभास हुआ और आपके व्यक्तित्व से उपस्थित जनसमूह प्रभावित हुआ। तदुपरान्त प्रधानाचार्य डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल मौसम विहार श्रीमती वन्दना कपूर जी ने आर्य समाज और विश्व बन्धुत्व पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर सभी प्रधानाचार्यो के वक्तत्व से प्रभावित हो डी.ए.वी., प्रादेशिक सभा एवम् आर्य समाज अनारकली के प्रधान श्री पूनम सूरी जी ने विशेष रूप से आशीर्वाद एवम् अभिनन्दन किया।

शान्ति पाठ के उपरान्त अपराह्न सहभोज के साथ प्रथम दिवसीय कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

शनिवार 29 नवम्बर 2014 को प्रातःकालीन यज्ञ के उपरान्त डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल विकासपुरी से श्री दीपक शर्मा द्वारा मधुर भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इसी सत्र में प्राचार्या डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल ईस्ट ऑफ कैलाश श्रीमती ईरा खन्ना जी के नेतृत्व में स्कूल के वरिष्ठ वर्ग के विद्यार्थियों द्वारा कन्या भ्रूण हत्या के विरूद्ध में एक लघु नाटिका ''चिड़िया दा चम्बा'' प्रस्तुत की गई। लघु नाटिका की पृष्ठ भूमि एवम् संवाद इतने प्रभावित ढंग से संजोए गए थे कि उपस्थित जनसमूह ने अपनी करतल ध्वनि द्वारा बच्चों के उत्साह को बढ़ाया। इस सत्र में प्रधानाचार्य डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल अशोक विहार-4 श्रीमती भारद्वाज के नेतृत्व में रक्तदान पर लघु नाटिका ''अनमोल उपहार'' प्रस्तुत की गई। जिसे सभी ने पसंद किया। इसी अवसर पर प्रधानाचार्य डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल श्रेष्ठ विहार श्रीमती प्रेमलता गर्ग के नेतृत्व में पर्यावरण पर आधारित ''धरती धानी'' प्रस्तुत की गई। जिसे

(शेष पृष्ठ 23 पर)

प्रधानाचार्या श्रीमती आई.पी. भाटिया, श्रीमती रेणू लरोईया, श्रीमती वन्दना कपूर एवम् श्रीमती प्रेम लता गर्ग

दया नहीं सम्मान की अधिकारी है नारी

आदिकाल से नारी ने अपने त्याग, प्रेम, श्रद्धा तथा चरित्रबल से संस्कृति का उत्थान किया है। नारी के मातृत्व से मानव का जन्म हुआ है और नारी के प्रेमत्व से मानव जाति का नियमन हो पाया है। वैदिक इतिहास को देखें, समग्र इतिहास नारी के उज्ज्वल त्याग, प्रेम, श्रद्धा, समाज सेवा, आत्म विकास और तप का ही रूप है। प्रत्येक क्षेत्र में नारियों ने गौरवपूर्ण कार्य किए हैं।

हमारे गरिमापूर्ण इतिहास में जहाँ एक ओर यह वेद मन्त्र का भाग प्रसिद्ध हुआ है। **'' यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता''** तो वहीं दूसरी ओर समाज में व्याप्त कुरीतियों ने आज उस इतिहास पर प्रश्न-चिन्ह लगा दिए हैं। सामयिक परिस्थितियों से उत्पन्न परम्पराएं धर्म का आधार बन गई हैं और उन परम्पराओं की अर्गलाओं में बंदिनी नारी सिसक-सिसक कर दम तोड़ रही है।

झूठे अहंकार, अधिकार प्रदर्शन और लोभ ने भयानक तांडव किए हैं, कहीं दहेज के रूप में, कही अशिक्षा और गुलामी के रूप में। पुरुष ने नारी के समर्पण और त्याग का मूल्याकनं न करते हुए उसके साथ असमानता और असहयोग करना ही अपना कर्त्तव्य समझ लिया। परंपराओं के रूप में जो जहर हमें मिला उसी के परिणाम स्वरूप लड़के और लड़की में अंतर समझा जाने लगा। दु:ख तब होता है जब बाल्य-काल से ही लड़का और लड़की में ये संस्कार हमारी माताओं और बहनों द्वारा ही दिए जाते हैं और लड़की कितनी ही गुणवती और सुशील क्यों न हो फिर भी प्राथमिकता लड़के को ही दी जाती है। इसका कारण है अशिक्षा, हमारी वो परम्पराएं जहाँ पर हमारे भविष्य की गारण्टी केवल मात्र लड़कों के हाथ में रहती है।

नारी की प्रतिष्ठा, देश के सुन्दर भविष्य व स्वस्थ समाज निर्माण के महान उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हमें पहल करनी होगी। वेद में नारी और पुरुष की भेदक रेखा कहीं भी दृष्टिगत नहीं होती। हमारा प्राचीन इतिहास नारी के तेज, ओज विद्वता की गौरव पूर्ण गाथाओं से मंडित है काल के प्रवाह से पुरुष प्रधान समाज की कुंठित शैवाल के नीचे यह इतिहास छिप गया। नारी को केवल मात्र एक प्रसाधन, खिलौना बनाकर विवशता की खाई में धकेल दिया गया। जिस नारी से पोषण, संस्कार व जीवन मिला, उसी का अपमान जीवन का ध्येय बन गया। मनमाने नियम निर्धारित कर उसे पिंजरे का कैदी बना दिया गया।

भ्रूण हत्या का महान पाप आज बढ़ता ही जा रहा है। हमें मातृ शक्ति की महता को स्थापित कर इस समस्या का निराकरण करना है। देवदासी प्रथा हमारी संस्कृति का कलंक है। आज भी कम ही सही पर प्रचलित है। पुरुषों से अधिक काम करने पर भी महिलाओं के वेतन में समानता न होना। इस पर भी हमें चिंतन करना होगा। ग्रामीण परिपेक्ष के माता-पिता लड़कियों को पढ़ाने में रूचि बहुत कम लेते हैं और लड़कों को पढ़ाने में अधिक। नारी साक्षरता से देश प्रगति की ओर अग्रसर होगा। अश्लील विज्ञापनों को प्रचार-प्रसार आज के युग में बढ़ता जा रहा है। नारियों की उत्तेजक मुद्राएं क्या नारी के प्राचीन वैभव को सुरक्षित रख रही हैं? यह सोचना आज आवश्यक हो गया है।

भारतीय संस्कृति में माता को तीर्थ माना गया-'मातृदेवो भव'। भारतीय नारी ईश्वर की अभिव्यक्ति है और उसका सम्पूर्ण जीवन इस विचार से ओत-प्रोत है कि वह मां है। मातृत्व में ही भारतीय नारी का पूर्णत्व निहित है। **'कुपुत्र जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति'** पुत्र-कुपुत्र हो सकता है पर माता कुमाता नहीं हो सकती।

मां शब्द बहुत ही प्यारा शब्द है। मां शब्द से समूचे शरीर में अमृत संचार हो जाता है। जिसे भी हमने श्रद्धा से मां पुकारा उसे मां के रूप में ही देखा जाता है। यही हमारी संस्कृति है। मां जिसने वात्सल्य के अमृत से खून को दुग्ध में परिवर्तित कर शिशु को इस वसुन्धरा पर प्रथम आहार देकर जीवन दान दिया। अपनी नींद, भूख सब त्याग शिशु के लिए अपना समस्त सुख व वैभव उत्सर्ग किया। जीवन पाठशाला की प्रथम गुरु मां ने गर्भावस्था से ही उन्नत संस्कारों की विरासत प्रदान कर सृजन की अनमोल कृति प्रस्तुत की। जब भी पीड़ा, तनाव, संकट आया मां को ही पुकारा। यही कारण है कि इतने उत्सर्ग के उपरान्त मां जैसे पावन रिश्ते पर भी प्रश्नचिन्ह खड़े हैं। मां के वात्सल्य और करूणा का आज कोई मूल्यांकनं नहीं रह गया है। मां की वृद्धावस्था आज के सुपुत्र पर बोझ बनती जा रही है। सेवा के पावन अर्ध्य से पांव पखारना तो दूर की बात है आज तो पास बैठकर उसके दु:ख में सहभागी बनना भी उसका कर्त्तव्य नहीं रहा।

इतिहास साक्षी है कि माता की ममतामयी गोद में वीर रस से ओत-प्रोत लोरियों ने ऐसे रण बांकुरों को जन्म दिया, जिनके शौर्य की पावन गाथाएं आज भी दिग्दिगांत को आलोकित कर रही हैं। प्रकाश स्तम्भ बनकर मानव मात्र को प्रेरणा दे रही हैं।

संस्कारों का अभाव मानव को पतन के गहरे गर्त में धकेलता है जिसके भयावह परिणाम परिवार, समाज, देश और राष्ट्र भोगता है। मैं, विश्व की सभी माताओं से अपील करता हूँ कि वह अपने वात्सल्य के आंचल में ममता व प्रेम से मानवता की मूर्तियाँ गढ़कर इस दुनियाँ को वीरान होने से बचा लें। क्लबों, होटलों की विलासितापूर्ण संस्कृति से बाहर होकर अच्छे, स्वस्थ, बुद्धिमान एवं सांस्कृतिक विरासत से परिपूर्ण नागरिकों की पौध तैयार करें, जिससे सम्पूर्ण विश्व में आतंकवाद, तनाव, भय, पीड़ा, अन्याय, अत्याचार समाप्त हो और मनुर्भव की बात चरितार्थ हो।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारी सम्मान के लिए जो सुधार के कार्य किए इसी का फल है कि नारी सुशिक्षित हुई और इसी कारण अधिक रूप से सुशिक्षित भी हुई। भारत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री जी ने अजमेर निर्वाण उत्सव पर कहा या अगर स्वामी दयानन्द ना होते तो में आज भारत की प्रधानमन्त्री ना होती। यह था इस सुधार का प्रमाण परन्तु आज नारी शिक्षित तो हुई। आर्थिक रूप से सुरक्षित भी परन्तु समाज में फैली कुरीतियों के कारण एवं वे पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से हमारी महिलायें सुरक्षित नहीं हो पाई। हर आंख माँ रूपी-बहन रूपी महिला पर गिद्ध की तरह पड़ रही है। बलात्कार और छेड़छाड़ की शिकार होती महिला आज असहाय होकर रह गई है। आज फिर आर्य समाज को दयानन्द के मानस पुत्र होने के नाते संगठित हो इस क्षेत्र में पहल करनी चाहिए। दयानन्द जी ने जिस नारी को अपने समय की कुरीतियों से बाहर निकाला था आज वह फिर आर्य समाज की और आशा से देख रही है। हमारा इतिहास गौरवता से परिपूर्ण है, हमारा वर्तमान उज्ज्वल है, हमारा भविष्य उज्ज्वल है हम संगठित होकर साहस से आगे बढ़ेंगे तभी इन कुरीतियों का पूर्ण विनाश कर सकेंगे। स्वस्थ समाज रचना से ही देश का भविष्य सुखद व सुन्दर बनेगा।

अजय टंकारावाला

आदर्श मां एवं पत्नी

❒ महात्मा चैतन्य मुनी

वेदों में नारी की महता और प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में अनेक मन्त्र आए है। यह एक वास्तविकता भी है कि यदि नारी वास्तव में अपनी गुणवता के अनुसार जीवन यापन करे तो वह अपने-आप में सुमहान् तो है ही। ऋग्वेद के मन्त्रों में एक नारी के उद्‌गार इस प्रकार व्यक्त किए गए है-**उदसौ सूर्यो अगादुदयं मामको भग:। अहं तद्विद्वला पतिमभ्यसाक्षि विषासहि:।। अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी। ममेदनु कतुं पति:सेहानाया उपाचरेत्।। मम पुत्रा: शत्रुहणोऽथो में दुहिता विराट्। उताहमस्मि संजया पत्यौ में श्लोक उत्तम:।। येनेन्द्रो हविषा कृत्व्यभवद् द्युम्न्युत्तम:। इदं तदकि देवा असपत्ना किलाभुवम।। असपत्ना सपत्नघ्नी जयन्त्यभिभूवरी। आवृक्षमन्यासां वर्चो राधो अस्थेयसामिव।। समजैषमिमा अहं सपत्नीरभिभूवरी। यथाहमस्य वीरस्य विराजनि जनस्य च।।** (ऋ 10-159-1 से 6) मैं स्वयं ज्ञानैश्वर्य को प्राप्त करके प्रभु दर्शन करती हूँ और काम-क्रोध आदि शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके अन्यों को भी वैसा ही बनाती है, अहं केतु-मैं ज्ञानवान् बनती हूँ, अहं मूर्धा-मैं अपने क्षेत्र में शिखर पर पहुंचने का प्रयास करती हूँ, अहं उग्रा-मैं तेजस्वीनी बनती हूँ, मैं विवाचनी-प्रभु नाम का उच्चारण करने वाली हूँ और मैं सेहानाया-काम-क्रोध आदि शत्रुओं का दमन करने वाला हूँ। वह आगे यह कामना करती है कि मेरे पति भी इसी प्रकार के कार्यो को करने वाले हों। नारी स्वयं इस पकार के गुणों से सम्पन्न होकर न केवल अपने पति बल्कि अन्य परिवारजनों को भी वैसा बना सकने की सामर्थ्य रखती है... वह आगे कहती है कि मेरे पुत्र शत्रुहन्ता हो, मेरी पुत्री विशेष तपस्वनी हो, मैं विजयनी बनूँ और मेरे पति को संसार में उत्तम कीर्ति मिले। चौथे मन्त्र में कहती है कि मेरे पति विद्वानों की सेवा करने वाले हों, जितेन्द्रिय हो, दानी हो, उत्तम कर्म करने वाले हों, मन में दिव्य व उत्कृष्ट वृत्तियों वाले हों और मैं स्वयं रोगों व वासनाओं से ऊपर उठकर उन्हें भी वैसा ही बनाऊँ..... अगले मन्त्रों में कहती है-मैं रोगों व वासनाओं का हनन करने वाली होऊँ,।

अथर्ववेद में घर में उत्तम सन्तान प्राप्ति के लिए कुछ सूत्र इस प्रकार दिए गए है-**अग्ने जायस्वादितिर्नाथितेयं ब्रम्हौदनं पंचति पुत्रकामा। सप्तऋषयो.....**। (अ. 11.1.1) अर्थात् घर में अविरल यज्ञान्ति प्रज्वलित रहे, माता अदीनवृत्ति की हो व दिव्य गुणों को धारण करने वाली हो, स्वाध्यायशील हो तथा बुद्धिवर्धक सात्विक भोजन बनाने वाली हो, जिस परिवार का ऐसा उज्जवल वातावरण होगा उस परिवार को निश्चित ही उत्तम सन्तान प्राप्त होती है..... पत्नी मानवी-मनु की पुत्री अर्थात् समझदार हो तथा उसमें पतिसेवा, सन्तान निर्माण करने की कला, सदा ही मधुर वाणी का प्रयोग करने वाली, सदा संवेदनशील, सेवा-भाव वाली तथा साधनामय जीवन वाली हो।

यजुर्वेद में पति-पत्नी के कुछ गुण इस प्रकार बताए गए है- **भवन्तं न: समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञँहिँसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य न:।।** (यजु.12-60) भवन्तं न:-पति-पत्नी दोनों हृदय से एक-दूसरे के बने, समनसौ-दोनों ही आपस में समान मन वाले हों, सचेतसौ-एक ही इष्टदेव अर्थात् उस एक परमात्मा का ध्यान करने वाले हों तथा उनका ज्ञान भी एक सा हो...., अरेपसौ- दोनों ही दोषरहित होकर एक-दूसरे के प्रति पतिव्रता व पत्नीव्रती बनें रहें...., यज्ञं मा हिंसिष्टम्-यज्ञ की कभी भी हिंसा न करें अर्थात् यज्ञादि कर्मो को भी न छोड़े....., यज्ञपतिम्-यज्ञ के पति परमात्मा को न हिंसित करें अर्थात् उसकी उपासना कभी न छोड़े, जातवेदसौ-स्वयं पुरुषार्थ से धन कमाने वाले बनें और शिवौ भवतम्-धन कमाकर लोक कल्याणवाले बनें वे केवल अपना ही कल्याण न करें बल्कि सबके लिए कल्याणकारी बनें। धन के मद में आकर किसी का भी अशुभ न करें.... ऐसे दम्पतियों के लिए प्रभु कहते हैं कि अद्य न:- आज से तुम मेरे हो और मैं तुम्हारा हूँ.. प्रभु का बनने के लिए इसी वेद में आगे कहा गया है- **विश्वकर्मा त्वा सादायत्वन्तरिक्षस्य पृष्ठे.... ध्रुवा सीद।।** (यजु. 14-12) हे पत्नी वह विश्वकर्मा परमात्मा अन्तरिक्षस्य पृष्ठे सादयतु तुझे तभी हृदयान्तरिक्ष की श्री में बिठायेगा यदि तुझमें आगे के गण होंगे-ज्योतिष्मतिम्-तेरा जीवन ज्ञान की ज्योति से जगमगा रहा हो, प्राणाय, अपानाय, व्यानाय, विश्वस्मै-प्राणशक्ति के लिए, दोषों को दूर करने वाली अपान शक्ति के लिए और सारे शरीर में व्याप्त होकर नाड़ीसंस्थान को उत्तम रखने वाले व्यानशक्ति के लिए समर्थ हो, विश्वं ज्योति यच्छ-सम्पूर्ण ज्ञान देने वाली बन अर्थात् तू स्वयं ज्ञानी बन और सबको उस ज्ञान के प्रसाद को बांटने वाली बन, वायु ते अधिपति-तेरा गुण-सम्पन्न पति भी क्रियाशील हो तू उसे उस प्रकार की प्रेरणा व सहयोग आदि दे, तया देवतया अगिंरस्वत् ध्रवा सीद-उस देवतुल्य पति के साथ अंग-प्रत्यंग में रसवाले व्यक्ति की भान्ति तू ध्रव होकर रहने वाली बन....... इसी क्रम में आगे कहा गया है-**अधि पत्न्यसि बृहती दिग्विश्वे ते... यजमानं च सादयन्तु।।** (यजु. 15-14)। अधिपत्नी असि- हे स्त्री! तू घर की अधिक्येन पालयित्री है....., बृहती दिक्-यह प्रौढ़ा बृहस्पतिरूप अधिष्ठावाली-बढ़ी हुई उूर्ध्वा तेरी दिशा है, तेरे जीवन का लक्ष्य सर्वोच्च स्थिति में पहुंचना है, तूने उूर्ध्वा दिशा के अधिपति बनना है, ते देवा: विश्वे-बारह विश्वदेव ही तेरे देव है। इन बारह के बारह मासों के नामों से तुझे इस संसार वृक्ष की वशिष्ठ शाख बनना है, ज्येष्ठ बनना है, कामादि से पराभूत नहीं होना, शुभ उपदेश का श्रवण करना, इसे ही कल्याण का मार्ग समझना, इस पर चलने के लिए कल का प्रोग्राम नहीं बनना, कामादि को आज ही अभी आत्मावलोकन करके ढूंढ-ढूंढकर मारना है..... इस प्रकार अपनी उच्चता का पोषण करना है-यही तेरा ऐश्वर्य है... ... इसके आगे सांसारिक ऐश्वर्य तुच्छ है..... ये देव (बारह मास) यही बोध दे रहे है और ये ही तेरे अधिपतय: अधिष्ठातृरूपेण रक्षक होंगे। बृहस्पति: हेतीनाम् प्रतिधर्त्ता-ऊँचे से ऊँचे ज्ञान का पति गृहपति घर पर आने वाली घातक बातों का प्रतिकार करने वाला है, त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ स्तोमौ-पुष्टि तथा 33 देवों का धारण ही तेरा प्रभु स्तवन हो, वे त्वा पृथिव्याम् स्तभ्नीताम्-इस शरीर में सेवित करने वाले हों..... तेरे शरीर को ये पूर्ण स्वस्थ बनाएं, उक्थे वैश्वदेवाग्निमारूते अव्यथायै स्तभ्नीताम्- प्रशंसनीय विश्वदेव (दिव्यगुण), अग्नि (वैश्वानर अग्नि)तथा मरूत (प्राणापान) ये सब पीड़ा के अभाव के लिए तुझे करने की भावना तेरे साम और उपासन हों, ये तेरे हृदय में प्रतिष्ठित हों...... जीवन के सिद्धान्त बन जाएं..... कभी अलग न हों, देवेषु प्रथमजा: ऋषय: त्वा दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु-विद्वानों में प्रथम कोटि के तत्वद्रष्टा विद्वान तुझे ज्ञान के अमुक-अमुक अंश से तथा हृदय की विशालता से विस्तृत जीवन वाला बनाए, विधर्त्ता च अयं च अधिपति: ते च सर्वे संविदाना: त्वा यजमानं च स्वर्गेलोके सादयन्तु घर की आपत्तियों से बचाने वाली ज्ञानी गृहपति और यह आधिक्येन रक्षक 'विश्वदेव' और वे सब ज्ञानी एकमत्यवाले होकर तुझे और यज्ञशील गृहपति को दु:खाभाववाले लोक के ऊपर प्रकाशमय लोक में स्थापित करें।

– महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर, हि.प्र.

लोकसेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है

❒ स्व. श्री पं. रामचन्द्र जी देहलवी (शास्त्रार्थ महारथी)

आज कल लोग ईश्वर की उपासना के लाभ पूछते हैं। मैं ऐसे लोगों के विश्वास के लिए यह मजमून रख रहा हूँ कि हमारे पास ईश्वर की उपासना का क्या अर्थ है। यदि आप किसी मुसलमान से यह प्रश्न करें तो वह कहेगा कि हम खुदा की इबादत करते हैं। ''इबद'' का अर्थ बदा है अर्थात् वे अपने खुदा के सामने अपने बदा होने की प्रतिज्ञा करते हैं और उससे शब्द बन्दगी निकलता है। लोग आजकल प्राय एक दूसरे को बन्दगी करते हैं। हिन्दू भी प्राय ऐसा करते हैं। तो ऐसा कह कर अपने आपको गुलाम बनाया जाता है। इसलिए कम से कम हिन्दुओं को ऐसा शब्द नहीं कहना चाहिए। अब आप एक सनातनी से पूछ वह कहेगा कि हम परमात्मा की भक्ति करते हैं। भक्ति का अर्थ सेवा है। परन्तु आर्य समाज की उपासना का अर्थ है परमात्मा के निकट होना। परमात्मा के नजदीक रहने का क्या है मतलब इसके साथ ही मुसलमानों की इबादत और सनातनियों की भक्ति इन तीनों पर रोशनी डालूंगा।

मैंने एक बार दीनानगर के एक शास्त्रार्थ में मुसलमान भाई से पूछा कि आप बतलाएँ कि इस नमाज का क्या अर्थ है। इससे क्या लाभ है? उसने फरमाया कि हम खुदा का अदब बजा लाते हैं? मैंने उनसे पूछा कि क्या खुदा इससे प्रसन्न हो जायेगा, क्या वह बाह्य चीजों से प्रसन्न होता है या आन्तरिक भाव देखकर? यदि आन्तरिक भाव देख कर तो बाह्य दिखावट का क्या लाभ? इसके अतिरिक्त मैंने यह प्रश्न किया कि सचमुच खुदा प्रसन्न होगा, यदि वह खुश होगा तो उसमें तबदीली आ गई। आपने एक कुरानशरीफ की आयत पढ़ कर इस बात को दर्शाया कि खुदा ने अपने बन्दों को इबादत के लिए उत्पन्न किया उसे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं। इसलिए उसमें तब्दीली नहीं आती। तो फिर खुश करने का क्या अर्थ? वह भाई उससे आगे न चल सका। अब आर्य समाज की उपासना को लें। हम पर यह प्रश्न किया जाता है कि उसके समीप जाने का क्या अर्थ है? क्या परमात्मा दूर है जो इसके निकट जाएं। हमारा कहना यह है कि परमात्मा और जीव के अन्दर मकानी (दैशिक) या जमानी (कालिक) कोई फासला नहीं। मतलब यह है कि यदि हम परमात्मा के गुणों को अपने अन्दर धारण कर लें तो हम उसके निकट चले जायेंगे। परमात्मा हर स्थान पर विद्यमान है। वह जीव के साथ रहता है। हममें और उसके मध्य इल्मी फासला है। उदाहरण रूप में कई वस्तुएँ हमारे निकट होती हैं परन्तु हमें पता नहीं चलता। कई बार लेखनी कान में होती है हम उसे मेज पर डूढ़ते हैं। गाजियाबाद में एक बार मैंने अंधकार में अपना उपनेत्र (ऐनक) पगड़ी में रख दिया। जब ऐनक का ख्याल आया तो हम इधर उधर ढूंढते रहे। अन्त में सिर की पगड़ी में से मिल गई। मतलब यह कि यह इल्मी भूल थी। परमात्मा जाहिलों (मूर्खों) से दूर है और आकिलों (बुद्धिमानों) के समीप है।

अब सनातनियों की भक्ति को लीजिए। मैंने एक भाई से पूछा कि सेवा के क्या अर्थ है वह खिदमत के अर्थ न कर सका। मैंने कहा कि समय पर किसी मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करना खिदमत कहलाता है। अर्थात् आवश्यकता पूरा करना। अब आवश्यकता किसे कहते हैं? मुझे एक बार अध्यापक ने आवश्यकता का अर्थ बताया कि जिस वस्तु के बिना हमारा जरूर नुकसान हो उसे जरूरत कहते है। अर्थात् जिस वस्तु के बिना हम रह नहीं सकते वही जरूरत है। यदि हम जल न पिएं तो मर जायें। परन्तु क्या आपने इस बात पर विचार किया है कि जिस ईश्वर की आप जरूरियात (आवश्यकतायें) पूरी कर रहे हैं, उसकी आवश्यकतायें क्या हैं?

हम किसी को प्रसन्न करने के लिए सबसे प्रथम यह देखते हैं कि उसे किस वस्तु की आवश्यकता है। मैं एक मनुष्य के घर अभ्यागत रूप से जाता हूँ। वह मुझ से पूछता है कि आप क्या खायेंगे? वह पूछता है कि आप चाय पीवेंगे? मैं कहता हूं कि चाय मैंने कभी नहीं पी। तब वह कहता है कि अच्छा दूध पीलो। मैंने कहा दूध रात को पीता हूँ, वह कहता है कि अच्छा पूरी खालो, रोटी खालो। मैं कहता हूं कि अभी रोटी की जरूरत नहीं। गर्जोक वह ऐसी चीज ढूंढना चाहता है जिससे कि वह मुझे प्रसन्न करे। परन्तु कभी चूक भी हो जाती है। भाषा की गलतफहमी हो जाती है और सेवा बेजारीति से भी हो सकती है। एक बार लाला लाजपतराय जी गुजरात काठियाबाड़ में गये। वहा उन्हें एक सज्जन ने चाय पर बुलाया। चाय पेश की जब और देने लगे तो लाला जी ने कहा कि काफी है। उन्होंने फिर पूछा फिर लाला जी ने कहा कि काफी है। काफी का अर्थ यह है कि और नहीं चाहिए परन्तु उन्होंने उसको ''पीने वाली'' समझा और वह काफी बनाकर लाला जी के सामने ले आए। इस प्रकार बेजा तरीके पर भी खिदमत हो सकती है। एक रोगी को बादाम का हलवा खिला दिया जाय तो यह उसकी सेवा नहीं है बल्कि हानिकारक है। एक वृद्ध को यदि कठिन लड्डू दे दिये जायें तो वह अप्रसन्न हो जाएगा। इसी प्रकार किसी का उदर भरा हुआ हो, उसे खाने के लिए दिया जाए और जो भूखा है उसे न खिलाया जाय यह भी एक गलती है। मूर्ति को हलवा खिलाया जाता है किन्तु वह उस के होठों के आगे नहीं जाता, सब जानते हैं। देहली में स्त्रियाँ एक स्थानपर मूर्ति की पूजा करती हैं। वहा पर कई पदार्थ खाने के लिए पेश किये जाते हैं। एक बार मुझे उधर से गुजरने का अवसर मिला। देखा स्त्रियाँ मूर्ति के मुख पर हलवा लगा रही हैं। मैंने सोचा चलो इन्हें कुछ उपदेश ही दे चलें। मैंने मूर्ति के समीप जाकर देखा कि मूर्ति के होठों पर हलवा कई दिनों से चिमट कर सूख गया है और लकड़ी की तरह हो गया है। मैंने देवियों से कहा यह तो पहला हलवा भी नहीं खाती और इसे क्यों खिलाती हो देख लो यह कितने दिन का हलवा इसपर लगा हुआ है। देवियाँ देख कर हँस पड़ीं। मैंने कहा यह मूर्तियाँ कुछ नहीं खाती। यदि यह खाने लग जावे तो सबसे पहले उनका विरोध पुजारी ही करेंगे क्योंकि अगर मूर्तियां ही सभी कुछ खा जावें तो पुजारियों को क्या मिले।

परमात्मा पूर्ण है उसे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं, परन्तु फिर भी कोई लड्डू ले जा रहा है कोई फूल। ईश्वर पूर्ण है और प्रकृति जड़। जो चीज पूर्ण है कि वह किसी से कुछ नहीं चाहती वह दूसरों के लिए है प्रकृति न अपने सम्बन्ध में कुछ जानती है और न किसी के विषय में, किन्तु ईश्वर अपने आप को भी जानता है और दूसरों को भी। एक ईश्वर पूर्ण है और दूसरी प्रकृति। न ईश्वर को किसी चीज की आवश्यकता है न प्रकृति को। उनसे कोई चीज ली जा सकती है, उन्हें दी नहीं जा सकती। आर्य समाजी उपासना करना चाहता है ईश्वर के

समीप बैठना चाहता है इसलिए कि ईश्वर से कुछ लेकर उसकी खिदमत करे। अब खिदमत किस तरह की जाती है। आप एक पंडितजी के घर जाते हैं और एक हाथी का खिलौना भी उनके घर ले जाते हैं। आप पंडित जी के लड़के को वह हाथी देते हैं और कहते हैं कि लो बालक। इसपर सवारी करो। पंडित जी बहुत प्रसन्न होगें और आपका सत्कार करेंगे। परन्तु यदि वही हाथी आप लेकर पण्डित जी से कहें पण्डितजी यह है आप की सवारी के लिए, पण्डितजी। यह है आप की सवारी के लिए, पण्डितजी अति क्रोध करेंगे। उनकी स्त्री अलग नाराज, बच्चा दूर-दूर। अब हाथी को दोनों अवस्थाओं में एक ही घर में रहना है फिर कारण क्या है कि बच्चे को देने पर पण्डित जो खुश पर जब उन्हें दिया गया तो नाराज।

लोक सेवा ही ईश्वर की खिदमत है। पण्डित को उस हाथी की जरूरत नहीं किन्तु उसके लिए वह अत्यन्त हेय है परन्तु यदि उसे दिया तो वह बड़ा नाराज होगा। क्या ईश्वर नाराज न होगा। यदि उस किसी वस्तु की आवश्यकता न हो और दी जाय। यदि वही चीज उसके बच्चों को दी जाय तो वह प्रसन्न होगा और यह उसकी सेवा है, भक्ति है। खिदमते खलक भी ईश्वर की उपासना और खिदमत है और अगर उसके बच्चों को लाभ पहुंचेगा तो ईश्वर प्रसन्न होगा। अब आप सब शंका में पड़ जाएंगे कि यदि लोक सेवा ही ईश्वर की उपासना है तो दो समय संध्या पढ़ने की क्या आवश्यकता है। इसके सम्बन्ध में आप को बतला दूँ कि दो समय संध्या पढ़ना जरूरी ही है। संध्या करना अपने आपको खलक की सेवा के लिए तैयार करना है।

गिरने से मत डरिए

❒ डॉ. विजय अग्रवाल

यहाँ मैं आपसे एक ऐसी बात कहने जा रहा हूँ, जो हम सबसे जुड़ी हुई है और वह है-हारने की बात, पराजित होने की बात। यह बात है निराश होने की बात, किन्तु फिर भी उठकर खड़े हो जाने की बात।

मैंने बहुत सोचा लेकिन सफल नहीं हो सका। आप सोचकर देखिए शायद आप सफल हो जाएँ। आपको सोचना यह है कि क्या आप किसी भी एक ऐसे आदमी का नाम बता सकते हैं, जो अपनी जिन्दगी में कभी भी असफल नहीं हुआ हो। इसे आप यूँ भी कह सकते हैं कि क्या आप पैदल चलने वाले एक भी ऐसे व्यक्ति का नाम बता सकते हैं, जो कभी गिरा न हो। मैं तो किसी भी ऐसे आदमी के बारे में सोच नहीं पाया हूँ और मुझे उम्मीद है कि आप भी नहीं सोच पाएँगे, क्योंकि ऐसा कोई आदमी आपको मिलेगा ही नहीं और यदि आपको मेरी इस बात पर विश्वास हो रहा है, तो फिर आपको इस बात पर भी विश्वास हो जाना चाहिए कि आपके साथ भी यही होगा।

अक्सर होता यह है कि जब हम असफल हो जाते हैं, तो अन्दर से टूट जाते हैं। कुछ लोग तो इतने अधिक टूट जाते हैं कि उन्हें चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देने लगता है और वे सोच लेते हैं कि अब कुछ नहीं हो सकता, जबकि ऐसा होता नहीं है। एक बहुत अच्छी बौद्ध कहावत है कि **''चारों तरफ अंधेरा है तो कोई बात नहीं। बर्फ गिर रही है, तो कोई बात नहीं। सूरज फिर से निकलेगा, क्योंकि सूरज कभी मरता नहीं है।''**

यहाँ मैं आपके लिए एक ऐसी सच्ची कहानी प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिसे सुनने के बाद शायद आप इस पर विश्वास न करें, लेकिन आपके इस पर विश्वास करना ही चाहिए, क्योंकि यह बहुत अधिक नहीं, बल्कि लगभग पौने दो सौ साल पुरानी ही बात है।

यह उस आदमी की कहानी है, जो 21 वर्ष की उम्र में व्यापार में असफल हुआ, 22 वर्ष की उम्र में चुनाव की दौड़ में हारा, 24 साल की उम्र में फिर से व्यापार में असफल हुआ, 26 साल की उम्र में उसकी प्रेमिका की मृत्यु हो गई, 27 साल की उम्र में उसे नर्वस ब्रेकडाउन हो गया। 34 साल की उम्र में वह संसद के चुनाव में हारा, 36 साल की उम्र में फिर हारा, 45 साल की उम्र में एक बार फिर सीनेटर बनने से वंचित रहा और 52 वर्ष की उम्र में वह अमेरिका का राष्ट्रपति चुन लिया गया। इस शख्स का नाम था-अब्राहम लिंकन।

कभी-कभी तो यह भी कहा जाता है कि असफलताएँ जितनी बड़ी होंगी, सफलताएँ भी उतनी ही बड़ी मिलेंगी। घुड़सवार ही घोड़े पर से गिरा करते हें, घुटनों के बल चलने वाले नहीं।

महत्वपूर्ण बात यह नहीं होती कि वह गिरा की नहीं। महत्वपूर्ण बात यह होती है कि वह गिरकर उठा कि नहीं। और यदि गिरकर उठा, तो उठन में समय कितना लगाया, क्योंकि यही उस बात का निर्धारण कर देगा कि वह कितने समय बाद सफल होगा। जो जितनी जल्दी उठ जाएगा, वह उतनी जल्दी सफल भी हो जाएगा। यही इस प्रकृति का नियम है और इसी नियम को आत्मसात करके हमें अपनी जिन्दगी के इस सफर को जारी रखना है। इससे हमें निराशा नहीं होगा और हमारी यह यात्रा जारी रह सकेगी।

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

सचेतन श्वास है आरोग्य की अनुपम कुंजी

❒ सीताराम गुप्ता

उर्दू शायर 'साहिर' होशियारपुरी साहब का एक शेर याद आ रहा है:

साँस लेने का अगर नाम है जीना 'साहिर',
साँस लेने के भी अंदाज़ बदलते रहिये।

हमारे साँस लेने के अंदाज का हमारे फेफड़ों के स्वास्थ्य से विशेष संबंध है और हमारे फेफड़ों के स्वास्थ्य से हमारे संपूर्ण स्वास्थ्य का गहन संबंध है। इस प्रकार हमारे साँस लेने का अंदाज हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वैज्ञानिक अध्ययन भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। हाल ही के वैज्ञानिक अध्ययनों द्वारा सिद्ध होता है कि सिर्फ एक गहरी साँस लेने भर से हमारा साँस लेने का पैटर्न री-सैट हो जाता है। हर गहरी साँस हमारे श्वसन तंत्र को अधिकाधिक तरोताज़ा कर देती है। वैसे भी गहरी साँस का अर्थ है अधिक मात्रा में ऑक्सीजन का फेफड़ों तक जाना और रक्त में मिलकर शरीर को अधिक ऊर्जा प्रदान करना।

जब आपको नीचे रखी हुई या गिरी हुई कोई चीज़ उठाने के लिए अचानक झुकना पड़ता है अथवा लगातार झुककर काम करना पड़ता है तो कई बार शरीर में दर्द हो जाता है अथवा मोच आ जाती है। विशेष रूप से जब आप अपनी झुकी हुई कमर को सीधी करने का प्रयास करते हैं तो काफी पीड़ा होती है। शरीर के अन्य अंगों के साथ भी प्राय: ऐसा होता रहता है। पैर फैलाने या इकट्ठा करने में भी दर्द महसूस होता है। शरीर में कहीं भी दर्द होने का एक सामान्य कारण है शरीर के उस भाग में अथवा बिंदु विशेष पर ऊर्जा की कमी या ऊर्जा के प्रवाह में रुकावट या अनियमितता होना।

ऊर्जा के प्रवाह में रुकावट या अनियमितता के भी अनेक कारण हो सकते हैं लेकिन साँसों के सही अभ्यास द्वारा हम आसानी से ऊर्जा के प्रवाह में रुकावट या अनियमितता को दूर कर दर्द अथवा रोग से मुक्ति पा सकते हैं। यदि आप दर्द, मोच अथवा ऐंठन से बचना चाहते हैं और कार्य भी ठीक से करना चाहते हैं तो इसके लिए आप नीचे रखी हुई चीज़ को उठाने या झुककर कोई काम करने से पहले एक खूब गहरी साँस खींचकर पूरे शरीर में भर लें तथा उसे रोक लें। इसके बाद कार्य करें और काम पूरा हो जाने पर साँस बाहर छोड़ दें।

साँस क्या है? क्या मात्र वायु की कुछ मात्रा जो विभिन्न गैसों का मिश्रण भर है? यह ठीक है कि साँस का माध्यम वायु है तथा ऑक्सीजन जैसी गैस जीवित रहने के लिए अनिवार्य है लेकिन ये भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है कि साँस द्वारा प्रयुक्त वायु को उपचारक शक्ति में परिवर्तित करता है हमारा मन। मन ही है जो वायु को उर्जस्विता प्रदान करता है। मन की शक्ति के अभाव में न तो हमारी ज्ञानेंद्रियों का ही कुछ महत्त्व है और न कर्मेंद्रियों का ही। मन की शक्ति द्वारा उर्जस्वित साँस ही उपचार में सहायक होती है। जब भी शरीर के किसी अंग में दर्द की अनुभूति हो उस दर्द को देखने, उसे खोजने तथा उस तक पहुँचने का प्रयास करें और यह सब संभव है साँस के माध्यम द्वारा ही। दर्द को खोजने का माध्यम भी साँस ही है और इसके उपचार का माध्यम भी साँस।

साँस उपचार का महत्त्वपूर्ण माध्यम अथवा साधन है लेकिन साँस द्वारा उपचार करें कैसे? सबसे पहले शांत-स्थिर होकर बैठ जाएँ। कमर और गर्दन बिलकुल सीधी रखें। फिर धीरे-धीरे खूब गहरी-गहरी साँसें लें और छोड़ दें। साँसों के बीच के अंतराल को यथासंभव बढ़ाने का प्रयास करें अर्थात् साँसों को अंदर और बाहर यथासंभव रोकने का प्रयास करें। इसके लिए ज़ोर-जबरदस्ती बिलकुल नहीं करनी है। नियमित अभ्यास से ये अंतराल अपने आप बढ़ना शुरू हो जाएगा। गहरी-गहरी साँसें लेने के बाद साँसों की गति को स्वाभाविक स्थिति में आने दें तथा अपना सारा ध्यान साँसों के आवागमन पर लगा दें। हर आती-जाती साँस को ध्यानपूर्वक देखें। विपश्यना साधना में आनापान की तरह साँसों का अवलोकन करें। विपश्यना के आचार्य सत्यनारायण गोयंका कहते हैं

आते-जाते साँस का, रहे निरंतर ध्यान,
मन सुधरे मंगल सधे, होय परम कल्याण।

हाँ तो साँस द्वारा उपचार की प्रक्रिया में सारा ध्यान साँसों के आवागमन को देखने के लिए लगा दें। उस के बाद शरीर के जिस भाग में पीड़ा है उस भाग का मानसिक अवलोकन करें। दर्द को देखने का प्रयास करें। उसकी प्रकृति को समझने की कोशिश करें। मात्र एक प्रेक्षक की तरह देखना भर है करना कुछ भी नहीं। दर्द को दबाना नहीं है। उसे दबाने का संघर्ष समाप्त करना है। दर्द को अपना बनाना है। उसे मित्रवत देखो। इस प्रक्रिया में दर्द की तीव्रता अपने चरम पर पहुँच जाएगी और दर्द पूरे अंग में नहीं अपितु एक बिंदु पर सिमटता प्रतीत होगा। दर्द के उस बिंदु को खोजना है। यदि उस बिंदु को खोज पाए, उसे ध्यान से देख पाए तो न केवल दर्द विलीन होता नज़र आएगा अपितु दर्द के कारण का भी ज्ञान हो जाएगा। देखते-देखते आपकी अंत:प्रज्ञा विकसित होनी प्रारंभ हो जाएगी।

अब प्रश्न उठता है कि पीड़ा के स्थान तक कैसे पहुँचें? पीड़ा के बिंदु को खोजने की यात्रा कैसे संपन्न हो। इसका माध्यम भी साँस ही है। पहले खूब गहरी-गहरी साँसें लेकर और छोड़कर शरीर और मन का शांत-स्थिर कर लें। तदुपरांत एक खूब गहरी साँस खींचें और सारा ध्यान साँस पर लगा दें तथा साँस के साथ-साथ दर्द के स्थान पर पहुँच जाएँ। दर्द के स्थान पर पहुँचकर साँस तथा ध्यान को वहीं केंद्रित कर लें तथा अनुभव करें कि साँस की उपचारक शक्ति दर्द को सोख रही है, अपने में घोल रही है। इसके बाद इस अनुभव के साथ कि पीड़ा बाहर निकल रही है धीरे-धीरे पूरी साँस बाहर निकाल दें। अनुभव करें कि शरीर तनावमुक्त होकर हलका और स्वस्थ हो रहा है। शरीर को निरंतर ढीला छोड़ते जाएँ तथा उपरोक्त क्रिया दोहराते जाएँ। सामान्य दर्द ही नहीं बड़ी से बड़ी व्याधियों का उपचार इस प्रक्रिया से संभव है। आपको सिर्फ अभ्यास करना है और पूरे विश्वास के साथ।

तनाव, शिथिलता, थकान अथवा निराशा अनुभव कर रहे हैं तो भी उपरोक्त रीति से दो-चार साँस लेने पर ही तनावमुक्त होकर तरोताज़ा तथा उत्साहित हो जाएँगे। जब भी ऊर्जा की कमी महसूस होने लगे अथवा अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता अनुभव हो दो-चार गहरे साँस लें और छोड़ दें। बस इतना ही करना है लेकिन अत्यंत ध्यानपूर्वक तथा सचेत होकर। ध्यान रहे हर आने वाला साँस आपकी ऊर्जा के प्रवाह के अवरोध को समाप्त कर आपकी ऊर्जा के प्रवाह को नियमित व सशक्त कर रहा है तथा हर बाहर निकलने वाला साँस आपकी शिथिलता, थकान, उदासीनता, तनाव तथा इनसे उत्पन्न पीड़ा व रोग को सोखकर बाहर फेंक रहा है बिलकुल एक एग्जॉस्ट फैन की तरह।

ध्यान रहे हर आने वाला साँस आपके पसंदीदा पारदर्शी उजले रंग का है जिसमें उपचारक शक्ति है तथा हर बाहर निकलने वाला साँस गाढ़ा साँवले या धूसर रंग का है। यह भावना करें कि हर अगली बार बाहर निकलने वाला साँस निरंतर साफ हो रहा है। आप निरंतर निर्मल और स्वस्थ हो रहे हैं। आपमें एक नई ऊर्जा, एक नई शक्ति तथा स्फूर्ति

व एक नए उत्साह का संचार हो रहा है। और इस प्रक्रिया के अंत में आने वाले तथा जाने वाले साँस का रंग एक सा हो जाता है और इसी के साथ समाप्त हो जाती है सारी पीड़ा और सारे रोग। वास्तव में दर्द को देखना अपनी श्वास प्रक्रिया को देखना ही है और श्वास प्रक्रिया को देखने का अर्थ है ध्यान परिवर्तन। ध्यान परिवर्तन द्वारा रोग के स्थान से आरोग्य पर ध्यान केंद्रित करना ही वास्तविक उपचार है और मन की उपचारक शक्ति इसमें सहायक होती है। इसमें मन की भावना का विशेष महत्त्व है। जैसी मन की भावना वैसी शरीर की अवस्था।

यदि मन चंचल है, उद्विग्न है, तनाव की स्थिति में हैं तो लंबी-गहरी साँसें लीजिए और छोड़ दीजिए। हर बाहर निकलने वाली साँस आपको अपेक्षाकृत शांत, उद्वेगरहित तथा तनावमुक्त करने में सहायक होती है। जब तक आप शांत, उद्वेगरहित तथा तनावमुक्त नहीं हैं तब तक आप किसी भी कार्य को अच्छी तरह नहीं कर सकते। यदि आप की समस्त ऊर्जा एकाग्र नहीं हो पाती है तो कार्य अच्छी तरह कैसे होगा? बिखराव की स्थिति में कार्य करेंगे तो पीड़ा स्वाभाविक है। गहरे सचेतन साँसों के माध्यम से एकाग्रता प्राप्त कर कार्य को आसानी से पूरा करना संभव है। योग में प्राणायाम तथा विपश्यना में साँसों का अवलोकन जिसे आनापान कहते हैं तथा साँसों के अवलोकन के माध्यम से शरीर का अवलोकन जिसे विपष्यना कहते हैं साँसों के अभ्यास पर ही आधारित हैं। प्रेक्षाध्यान में श्वास-प्रेक्षा की प्रक्रिया भी साँसों का अभ्यास ही है।

विशेष रूप से दुकानों के शटर उठाते और गिराते समय कई लोगों को बड़ी परेशानी होती है क्योंकि इसमें पूरे शरीर को झुकाना पड़ता है। पादहस्त आसन जैसी अवस्था हो जाती है तो क्यों न पादहस्त आसन करते हुए ही शटर उठाने और गिराने का कार्य पूरा किया जाए? इसके लिए सबसे पहले सीधे खड़े होकर एक गहरा साँस लें और साँस को रोके हुए धीरे-धीरे झुकें तथा शटर का ताला खोलकर उसे धीरे-धीरे ऊपर की ओर ले जाएँ। पूरा शटर खुल जाने के बाद सीधे खड़े होकर साँस बाहर निकाल दें और फिर एक-दो और गहरी-गहरी साँस लें। प्रारंभ में थोड़ी दिक़्क़त आ सकती है लेकिन कुछ दिनों के अभ्यास के बाद ये बहुत आसान और उपयोगी क्रिया बन जाएगी। कार्य भी सुगमतापूर्वक हो सकेगा और स्वास्थ्य भी अच्छा हो जाएगा।

कार्य करते हुए व्यायाम अथवा व्यायाम करते हुए कार्य करना सरल और व्यावहारिक भी है क्योंकि इससे समय की बचत होती है। व्यस्त व्यक्तियों के लिए तो यह बहुत ज़रूरी भी है। अत: इस क्रिया को अच्छी प्रकार सीख कर अपनी आदत में शामिल कर लें। जिस प्रकार साधना या ध्यान करने से पूर्व शरीर और मन को निश्चल और एकाग्र करने के लिए लंबी-गहरी साँसें ली जाती हैं और छोड़ी जाती हैं उसी प्रकार हर कार्य को करने से पहले कुछ गहरी-लंबी साँसें अवश्य लें। सुबह बिस्तर से उठने से पूर्व तथा रात को सोने से पहले व दिन में हर कार्य को करने से पहले और बाद में गहरी-गहरी साँसें लें। ये क्रिया बिना बोले निश्चलता और एकाग्रता के साथ करें।

शरीर के किसी भी भाग में आपको जकड़न, दर्द अथवा शिथिलता अनुभव हो रही है तो फौरन गहरी साँस लेकर पूरे शरीर तथा शरीर के अंग विशेष को हवा से भर लीजिए और सारा ध्यान वहीं केंद्रित कर दीजिए। आपको कुछ नहीं करना है केवल निश्चल, शांत और एकाग्रचित्त होकर बैठना है। गहरी साँसें लेते रहिए और छोड़ते रहिए। आपके शरीर के उस भाग का अवरोध समाप्त हो जाएगा। दर्द समाप्त हो जाएगा। यदि गहरे साँस लेने और छोड़ने की आदत बना लेंगे तो शरीर के किसी भी भाग में अवरोध और अवरोध से उत्पन्न पीड़ा होने का प्रश्न ही नहीं उठता फिर भी कार्य विशेष को करने से पहले एक गहरी साँस अवश्य लीजिए और छोड़ दीजिए।

उठते-बैठते तथा कार्य करते समय आपकी कमर अर्थात् रीढ़ की हड्डी तथा गर्दन बिल्कुल सीधी तथा समकोण की अवस्था में होनी चाहिएँ। यदि कार्य करते समय इनमें झुकाव पैदा हो गया है तो सीधी कर लीजिए लेकिन झटके के साथ नहीं। पहले गहरी साँस लेकर शरीर में हवा भर लीजिए, फिर सारा ध्यान रीढ़ की हड्डी पर केंद्रित कर दीजिए तथा अत्यंत धीरे-धीरे कमर को सीधे करते जाइये। इतने धीरे-धीरे कि स्वयं को भी पता न लगे कि शरीर के इस भाग में गति हो रही है। जैसे सुबह का धुँधलका कब प्रकाश में परिवर्तित हो गया अथवा सुरमई साँझ कब निस्तब्ध गहन रात में बदल गई पता ही नहीं चलता धीरे धीरे धीरे। जितनी सहजता से गति करेंगे उतनी ही अधिक सफलता मिलेगी। वास्तव में सहजता ही आध्यात्मिकता है, सहजता ही जीवन का उत्थान है और सहजता ही वास्तविक उपचार है।

आपने प्लंबर को कार्य करते देखा होगा। एक प्लंबर जब कॉपर अथवा अन्य धातु से बनी किसी पाइप को मोड़ता है तो मोड़ने से पहले उसमें रेत भर कर उसके दोनों सिरों को बंद कर देता है। इसके बाद अपेक्षित स्थान पर मोड़ने के बाद पाइप का रेत निकाल कर उसे लगा देता है। यदि बिना रेत भरे पाइप को मोड़ेंगे तो पाइप में मोड़ के स्थान पर अवरोध उत्पन्न हो जाएगा ठीक उसी तरह जिस प्रकार कोल्डड्रिंक का स्ट्रॉ मुड़ने पर अवरोध पैदा कर देता है। कार्य करने के लिए शरीर को मोड़ने, झुकाने अथवा गति देने से पहले साँस द्वारा वायु अर्थात् प्राणवायु पूरी तरह से शरीर में भर लीजिए फिर अंग संचालन कीजिए कोई कष्ट नहीं होगा। वैसे भी जितना गहरा साँस लेंगे उतनी अधिक ऑक्सीजन साँस के साथ फेफड़ों में पहुँचेगी और रक्त को कार्बन से रहित कर शुद्ध और ऊर्जस्वित करेगी। यही ऊर्जा केंद्रित होकर कार्य को सरलता से पूरा कर देती है।

योगासन अथवा व्यायाम से पूर्व हम गहरी साँस खींचकर शरीर में हवा भर लेते हैं तभी बिना पीड़ा के अभ्यास कर पाते हैं। हर कार्य कई आसनों अथवा व्यायामों का समुच्चय ही तो होता है। अत: व्यायाम के सिद्धांतों का पालन करते हुए ही कार्य करेंगे तो न केवल कार्य करने में आसानी होगी अपितु योगमय जीवन की ओर अनायास ही अग्रसर होते चले जाएँगे। मन और प्राण या साँस दोनों का गहरा संबंध है। जैसे-जैसे साँसों पर नियंत्रण होता जाता है वैसे-वैसे मन की एकाग्रता में भी वृद्धि होती जाती है।

साँस आपको नियंत्रित करें इससे पहले आप साँसों को नियंत्रित करना सीखें। साँसों पर नियंत्रण का अर्थ है मन पर नियंत्रण और मन पर नियंत्रण से संभव है सोच को अपेक्षित सकारात्मक दिशा में ले जाकर उसे वास्तविकता में परिवर्तित करना। मन की उचित अवस्था में ही हम अनेकानेक भयंकर शारीरिक व्याधियों, विशेष रूप से मनोदैहिक बीमारियों को जड़ से मिटा सकते हैं। जब साँसों के द्वारा भयंकर बीमारियों को ठीक किया जा सकता है तो सामान्य कार्य करने की कुशलता और क्षमता को तो हर हाल में विकसित किया जा सकता है। कार्य करने से पूर्व उचित रीति से साँस लेने की आदत डालिए और जीवन को अधिकाधिक लयात्मक और सक्षम बनाइये। यही योग है। गीता में भी कहा गया है **''योग: कर्मसु कौशलम्''** योग ही कर्मों में कुशलता है अर्थात् कर्म में कुशलता प्राप्त करके ही हम योग की ओर अग्रसर हो सकेंगे और श्वास-प्रक्रिया इसमें निस्संदेह महत्वपूर्ण घटक है।

ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, मो. नं. 09555622323

बच्चों के निर्माण में उपेक्षा घातक है

❐ स्व.पं. राजवीर शास्त्री

महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि-बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करें, जिससे सन्तान सभ्य और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें। जब बोलने लगे तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सकें, वैसा उपाय करे। जब वह कुछ-कुछ बोलने और समझने लगे, तब सुन्दर वाणी और बड़े छोटे मान्य पिता-माता राजा, विद्वान् आदि से भाषण, उनसे वर्तमान और उनके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करें। जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न होके सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे।'' (स.प्र. द्वितीय समु.)

बालक न केवल अपने ही वंश का दीपक होता है प्रत्युत राष्ट्र की भी सम्पत्ति होता है। जिस प्रकार राष्ट्र को सुसमृद्ध बनाने के लिए हम सब प्रकार के प्रयत्न करते हैं और सुरक्षा भी करते हैं। बालक के निर्माण में प्रथम गुरु माता होती है। आचार्य चाणक्य लिखते हैं-लालयेत् पञ्च वर्षाणि अर्थात् पाँच वर्ष तक बच्चे का लालन पालन माता किया करे। प्रत्येक घर की शान घर में खेलते कूदते बच्चे ही होते हैं। किसी कार्यवश बच्चे घर से बाहर चले जायें, तब घर-घर नहीं, प्रत्युत अरण्य सा लगता है अथवा किसी कारणवश सन्तान का अभाव रहता है। तब माता-पिता परेशान रहते हैं। सन्तान न होना, होकर भी मूर्ख रहना, अथवा दुर्जन हो जाना गृहस्थ का महान् दु:ख होता है। संस्कृत के एक नीतिकार ने लिखा है-**अज्ञात मृत-मूर्खेषु वरमाद्यौ न चान्तिमः। सकृत क्लेशायैवाद्यौ मूर्खस्तु पदे-पदे॥** अर्थात् सन्तान न होना मर जाना, इससे कुछ काल के लिए ही दु:ख होता है, परन्तु मूर्ख रहना या असभ्य रह जाना जीवन भर क्लेश देने वाले होते हैं। इसीलिए हमारे पूर्वज ऋषि-महर्षियों ने इन दु:खों से बचने के लिए हमें बहुत पहले ही सचेत किया था।

माता की शिक्षा का समय बालक के प्रथम पाँच वर्ष होते हैं। यद्यपि शिक्षा का समय गर्भस्थ शिशु भी होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि बालक अभिमन्यु पर गर्भस्थावस्था में ही चक्रव्यूह-भेदन के संस्कार पड़े थे। परन्तु यह बहुत तीव्र संस्कार वालों की बात हो सकती है। बच्चा जैसे ही बोलने लगता है, तब उसकी जिज्ञासावृत्ति प्रबुद्ध होती है जिस दशा को माता ही समझती है और उसे समझाती है। बच्चे की तोतली भाषा के भावों को भी समझकर उसका मार्गदर्शन करती हैं। महर्षि यद्यपि बाल ब्रह्मचारी थे किन्तु ग्रन्थों में लिखी बातें बहुत ही अलौकिक तथा मार्गदर्शन करती हैं।

कन्याओं को शिक्षित करने के लिए महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द आदि ने कितना प्रयास किया, वह बहुत ही श्लाघनीय व स्तुत्य है। क्योंकि सुशिक्षित माता ही सन्तान को सुशिक्षित बना सकती है। आज का समय बदल रहा है। आर्थिक समस्या दिन-प्रतिदिन विकराल बनती जा रही है। पुरुषों के साथ माताओं को भी नौकरी करनी पड़ती है। दोनों के सेवा करते हुए बच्चों की देखभाल करने का किसी को समय ही नहीं। अपने दुधमुँहे बच्चों को नौकरी या धाय आदि के सहारे छोड़कर सेवा कर चले जाते हैं, जिससे दोनों मिलकर गृहस्थ के भार का वहन कर सकें।

इन बच्चों के जिज्ञासा भाव को कौन शांत करे, यह भगवान भरोसे से ही रहता है। बच्चों का जो प्रथम विद्यालय होता है, वह नौकरी पर छोड़ देना कहाँ तक बुद्धि संगत होता है, यह सब अज्ञात अवस्था में ही बीतता है। यह काल ही बच्चों के निर्माण अथवा सीखने का होता है। बच्चों को यह समय नौकरी अथवा धायों के पास ही बिताना पड़ता है। जो समय माता के सान्निध्य में रहकर सद्गुणों को सीखने में बीतता है। फिर बच्चों का निर्माण कैसे सम्भव है। यह समय सद्गुणों व पारिवारिक व्यवहारों से वंचित हो जाता है, ऐसे बच्चे भविष्य में सभ्य तथा अच्छे नागरिक बन जायेंगे, ऐसी आशा करना दुराशामात्र ही होगी। इस अवस्था में जिज्ञासा के अतिरिक्त ग्रहण करने की शक्ति भी अत्युग्र होती है, बच्चा जिस वातावरण में रहता है, उनकी भाषा को भी बिना सिखायें ही सीख जाता है। जिस भाषा को स्कूल विद्यालयों व महाविद्यालयों में क्रमशः चढ़ते हुए भी बच्चे पूर्ण अधिकार नहीं कर पाते, बच्चे उस भाषा में एम.ए. तक पढ़कर भी पूर्ण से अधिकार नहीं बोल सकते, जैसा अधिकार बच्चे का अपनी मातृभाषा पर होता है। यद्यपि बच्चों को विद्यालय की भांति कोई सिखाता नहीं, किन्तु बच्चा दो-तीन वर्ष की अवस्था में ही अपनी मातृभाषा को सीख जाता है। जिसमें लिंग, वचन की किसी भी प्रकार त्रुटि नहीं करता है, इससे बच्चे की ग्रहण शक्ति का अनुमान आप कर सकते हैं। यही अमूल्य समय माता-पिता से दूर नौकरी व धायों के सान्निध्य में बच्चे बितावें, यह बहुत ही दुर्भाग्य की बात है। छोटे-छोटे बच्चे एक मिट्टी के कच्चे घड़े के समान होते हैं। जैसे आप कच्चे घड़े को जैसा बनाना, मोड़ना चाहते हैं, वह वैसा ही बन जाता है। कच्चे घड़े पर जैसा रंग-रोगन व बेल-बूटे आदि बना देते हैं, अग्नि में पकने पर वे वैसे ही बने रहते हैं। इसी प्रकार जब कोई पौधा छोटा होता है, उसमें अपरिपक्व तनों को इच्छानुसार मोड़ सकते हो, परन्तु बड़े होने पर मोटे-मोटे तनों को नहीं मोड़ा जा सकता अथवा गीली लकड़ी को भी आप मोड़ सकते हो, परन्तु सूखने पर उसका मुड़ना सम्भव नहीं, वह टूट जायेगी, किन्तु मुड़ेगी नहीं। बच्चों का यह काल कच्चे घड़े व पौधों की भांति ही होता है। इस काल को व्यर्थ यापन करना या करने देना बच्चों के भाग्य से खिलवाड़ ही करना है।

बच्चों को अच्छे संस्कार भी माता-पिता व गुरुजनों से ही मिलते हैं। बच्चों में अच्छे संस्कारों का भी अभाव होता जा रहा है। आज हमारे बच्चे विदेशी संस्कारों को सीखते जा रहे हैं। परिवार के गुणों का अभाव दिखाई देता है, इसमें भी माता का शिक्षा न देना ही कारण है। हमारे बच्चे माता-पिता न सीखकर डैडी-मम्मी, अंकल-आंटी आदि सीख रहे हैं। कोई बाहर से आने वाला यदि घर आकर पूछने लगे-''बच्चे तुम्हारी माता जी घर में हैं, या नहीं, तो बच्चे उत्तर देते हैं आप मम्मी से पूछ लो मुझे नहीं पता।'' यह अवस्था है भारतीय बच्चों की, उनसे आशा करना कि वे भारत माता के प्रति श्रद्धा का स्नेह रखेंगे, अपने माता-पिता का कैसे आदर करेंगे और भविष्य में माता-पिता की बात भी कैसे सुन पायेंगे। अत: अपने तथा पारिवारिक जनों को सुखमय तथा राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत करने के लिए हमें सजग होकर ही बच्चों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। हमारे क्रान्तिकारी महर्षि ने जो संदेश दिया है, उसकी उपेक्षा करने से हमारा भविष्य अन्धकारमय बनता जा रहा है। क्या भारतीय संस्कृति पर श्रद्धा रखने वाले भारतीय आर्य बन्धु उपर्युक्त महर्षि के लेख पर ध्यान देंगे। भौतिक-धन की अपेक्षा अपने राष्ट्र की धरोहर को सुरक्षित रख पायेंगे।

पाप का घड़ा एक न एक दिन भरता अवश्य है

राम और श्याम दो मित्र थे। दोनों ने दूध बेचने का व्यापार आरम्भ किया। राम स्वाभाव से ईमानदार, शांतिप्रिय, सज्जन व्यवहार का था जबकि श्याम कुटिल, लालची एवं क्रूर स्वाभाव का था। राम ने सदा ईमानदारी से दूध बेचा और कभी मिलावट नहीं की। जबकि श्याम पानी मिला मिलाकर दूध बेचता रहा। धीरे-धीरे श्याम धनी बनता गया और उसके पास अपना मकान, सम्पत्ति आदि हो गए जबकि राम निर्धन का निर्धन बना रहा। धीरे-धीरे राम के मन में एक विचार बार-बार घर करने लगा कि क्या कलियुग में अधर्म से ही सुख मिलता हैं? राम के मन में यह विचार उठ ही रहा था कि एक साधु उनके गांव में पधारे। राम ने उनके समीप जाकर कहा-महात्मा जी मनुष्य धर्म से फलता है अथवा अधर्म से फलता है। महात्मा जी मुस्कुराएं एवं राम को अगले दिन इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए आने को कहा। राम जब अगले दिन उनके समीप पहुंचा तो उसने देखा की महात्मा जी के यहां पर धरती में आठ फुट गहरा गढ़ा खुदा हुआ है। महात्मा जी ने राम को उस गढ़े में खड़े होने को कहा। अब उस गढ़े में जल डाला जाने लगा। जब जल राम के पैरों तक पहुंच गया तो महात्मा जी ने पूछा कोई कष्ट। राम ने उत्तर दिया नहीं कोई कष्ट नहीं हैं। जब जल राम की कमर तक पहुंच गया तो महात्मा जी ने पूछा कोई कष्ट। राम ने उत्तर दिया नहीं कोई कष्ट नहीं हैं। जब जल राम के गर्दन तक पहुंच गया तो महात्मा जी ने पूछा कोई कष्ट। राम ने उत्तर दिया नहीं कोई कष्ट नहीं हैं। जब जल राम के सर तक पहुंच गया तो महात्मा जी ने पूछा कोई कष्ट। राम ने उत्तर दिया महात्मा जी बाहर निकालिये नहीं तो जान पर बन आएगी। महात्मा जी ने राम को बाहर निकाला और पूछा अपने प्रश्न का उत्तर समझे। राम ने कहा जी नहीं समझा। महात्मा जी ने कहा, ''जब पानी आपके पैरों, कमर, गर्दन तक पहुंचा तब तक आपको कष्ट नहीं हुआ और जैसे ही सर तक पहुँचा आपके प्राण निकलने के हो गए। इसी प्रकार से पापी व्यक्ति के पाप जब एक सीमा तक बढ़ते जाते हैं तब एक समय ऐसा आता है कि उसके फल से उसका बच निकलना संभव नहीं होता और वह निश्चित रूप से अपने पापों का फल भोगता हैं। मगर पापों का फल मिलना निश्चित है।''

''अन्यायोपार्जितं द्रव्यं दशवर्षाणि तिष्ठति प्राप्ते तु एकादशे वर्षे समूलञ्च विनश्यति''

शिक्षा- पाप का घड़ा एक न एक दिन भरता अवश्य है।

ईश्वर का नया पता

हम सभी ने अपने-अपने तरीके से ईश्वर के घर बना रखे हैं। हमारे पास मन्दिर हैं, मस्जिद हैं, गुरुद्वारे हैं और चर्च हैं। आज हम ईश्वर के एक ऐसे नए घर का पता जानने जा रहे हैं, जिसे ज्यादातर लोग भूल गए हैं। ईश्वर के इस घर के पते को एक शायर ने इन खूबसूरत शब्दों को संजोया है।

अपना गम लेकर कहीं दूर न जाया जाए,
घर में बिखरी हुई चीजों को सजाया जाए।
घर से मन्दिर है बहुत दूर चलो क्यो यूँ कर लें,
किसी रोते हुए बच्चे को हँसाया जाए।

क्या खूब सुहानी बात कही है कवि ने। मित्रों, यहाँ बच्चों से मतलब है- बच्चे की तरह सीधे-सादे और सरल मन से। यह एक ऐसा भोला और कोरा मन होता है, जिसमें न तो ईर्ष्या होती है और न ही प्रतिशोध। यह जिज्ञासु मन होता है, जो ज्यादा से ज्यादा जानना चाहता है। यह उत्साह, उमंग और ऊर्जा से भरा मन होता है, जो दु:ख जानता ही नहीं। यह हमेशा खुश रहने वाला मन होता है।

जाहिर है मित्रों कि हम आप बच्चे तो नहीं बन सकते, लेकिन बच्चे जैसा तो बन ही सकते हैं। हम अपने शरीर को बच्चे जैसा नहीं बना सकते, लेकिन अपने मन को तो बना ही सकते हैं और बस, जैसे ही हम ऐसा कर लेते हैं, खुद को ही ईश्वर का घर बना लेते हैं। अब हमें बाहर कहीं जाने की जरूरत नहीं रह जाती।

ईश्वर का निवास बालमन में होता है। - संकीर्णताओं से मुक्त बालमन होता है। - जो बच्चों जैसा होगा, वह हमेशा ही उल्लास और उमंग से भरा हुआ होगा। - जानने की चाह बालमन के होने का प्रमाण है।

- साभार: लाईफ मन्त्रा पुस्तक

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

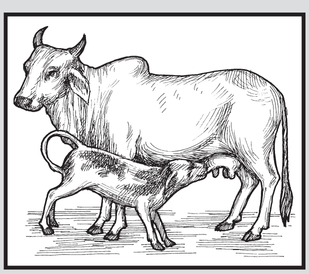

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

सम्माननीय रही है भारत में नारी

❒ डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

हम क्या थे क्या हो गए ऐसा विचार मन में तब आता है जब हम यूरोप, आस्ट्रेलिया रूस जापान और फ्रांस आदि पश्चिमी देशों को देखते हैं अमेरिका आज धन व विज्ञान सम्पन्न देश है जिस समय उक्त देश एक दम जंगली जीवन जी रहे थे हमारा भारत ज्ञान विज्ञान व धन तथा संस्कृति व संस्कारों से सम्पन्न था यहां नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्व विद्यालय थे प्राचीन काल में भी विश्वामित्र, वशिष्ठ, भारद्वाज पाणीनी, गौतम, कणाद जैसे सहस्त्रों ऋषि हुए तथा इनके यहां सहस्त्रों, विद्यार्थी गुरुकुलों आश्रमों में शिक्षा प्राप्ति हेतु रहते थे वहां व्याकरण, अष्टाध्यायी, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्या, धनुविद्या, भूगर्भ, खगोल, अर्थशास्त्र, योग, नीतिशास्त्र आदि अनेक विषयों की शिक्षा दी जाती थी गुरुकुलों में अलग-अलग बालक व बालिकाएं शिक्षा प्राप्त करते थे। कैकेयी, सीता, शकुन्तला, माद्री, कुन्ती, मैत्रेयी, गार्गी, माद्री, मदालसा जैसी अनेक सन्नारियां गुरुकुलों से शिक्षा प्राप्त विद्वान स्त्रियां थी।

प्राचीन काल में भारत की स्थिति विश्व में अद्वितीय थी महाराज इक्ष्वांकु, मनु, दिलीप, रघु, राजा दशरथ व राम के समय वैदिक युग में आर्यावर्त देश सर्व आदर्श व गुणों से सम्पन्न था। वेद का ज्ञान क्षीण होने से अनार्यों का प्रभाव बढ़ गया और अवैदिक मत बढ़ने लगे परन्तु उस काल में अब तक यूरोप आदि देश उन्नत स्थिति में ही थे वहां सामाजिक व आर्थिक स्थिति हीन थी स्त्रियों को हीन दृष्टि से देखा जाता था। स्त्रियों के अधिकार पुरुषों के समाज न थे स्त्रियों को मतदान करने का अधिकार भी न था। सन् 1813 में ब्रिटिश पार्लियामेन्ट ने एक बिल प्रस्तुत किया था जो अस्वीकृत कर दिया गया। इसके पश्चात् प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् अर्थात् 1814-15 के बाद ही इंगलैण्ड में स्त्रियों को वोट देने व राजनीति ने भाग लेने का अधिकार मिला था। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती में स्त्री शिक्षा व अधिकारों के विषय में प्रकाश किया था। ''हे मनुष्यो! जो रानी धनुर्वेद जानती हुई अस्त्र शस्त्र फैकने वाली है उसका वीरों को निरन्तर सत्कार करना चाहिए।'' ऋग्वेद भाष्य 6.65.15।

महर्षि ने वैदिक युग के अनुसार बताया कि स्त्री को पुरुष के बराबर अधिकार होने चाहिए वह संग्राम में पुरुष के साथ रहकर युद्ध करे, शिक्षा प्राप्त करे, स्त्रियों को न्याय स्त्रियों द्वारा मिले पुरुष के साथ राज कार्य करे, रानी सेनापति भी हो सकती है ऐसा अधिकार भारत में प्राचीन काल में था जो महर्षि दयानन्द ने पुनः प्रकाश किया। महर्षि ने स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार दिया। महर्षि दयानन्द ने स्त्रियों की शिक्षा को अनिवार्य बताया। उन्हें शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द, वैदिक ज्योतिष, मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य वेदान्त आयुर्वेद पढ़ने वाली स्त्रियों को संसार की उन्नति करने वाली बताया।

यही कारण है आज भारत में स्त्री प्रधान मन्त्री राष्ट्रपति चिकित्सक, न्यायाधिकारी सांसद विदेशमन्त्री वैज्ञानिक व अध्यापिकाएं आदि अनेक पदों पर सुशोभित हैं वह अच्छी गायक संगीतकार अभिनेत्रियों भी हैं वह विद्वान व वक्ता भी है सौरमण्डल की खोज करने वाली अन्वेषणकर्ता भी हैं।

महर्षि दयानन्द ने स्त्री को पुरुष के बराबर अधिकार की बात वेद के अनुसार ही कही है। भारत में वेद का ज्ञान क्षीण कर स्त्री की जो स्थिति हीन हो गई थी। आज उसमें अत्यधिक बदलाव हो रहा है।

परन्तु विडम्बना यह है कि अभी ऋषि के ज्ञान का प्रकाश पूर्ण रूपेण मानव जाति में नहीं हो पाया है क्योंकि चारों और भ्रष्टाचार, पापा चार, यौना चार कामुकता, ईर्ष्या, द्वेष, अराजकता व अमानवीय कुकृत्य देखने को मिल रहे हैं अनेक स्थानों पर स्त्री पर अत्याचार भी हो रहे हैं दहेज प्रथा पर कानून बनाकर भी विवाह पश्चात दहेज की मांग की जाती है बधुएं मार दी जाती हैं यातनाएं दी जाती हैं प्रताड़ित किया जाता है पर्दे में रखने को विवश किया जाता है घर में रहने को व बाहर घर की चौखट पार करने पर रोक लगाई जाती है डांटा या धमकाया जाता और अपमानित किया जाता है ऐसा नित्य प्रति हो रहा है।

आज स्त्री जाति की ऐसी अमानुषिक अत्याचारों भरे जीवन में नर्क जैसी स्थिति कहीं कहीं अब भी है जिन्हें इस स्थिति से बाहर निकालने की आवश्यकता है और ऐसे दहेज लोभी व अपराधियों अभिमानियों को राजकीय व सामाजिक न्यायोचित शारिरिक दण्ड देने की अवश्यकता है दहेज लोभियों को आजीवन कारावास का दण्ड मिलना चाहिए फिर भी ऐसे अपराधी कानून की आड़ लेकर बचने में सफल हो जाते हैं जो नहीं होना चाहिए।

- चन्द्रलोक कॉलोनी खुर्जा, मो. 8668684615

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **5000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

પ્રાચીન ભારતના મહાન વૈજ્ઞાનિકો

લેખાંક બીજો

ગયા અંકમાં આપણે પ્રાચીન ભારતના અંતરિક્ષ વૈજ્ઞાનિકોની લેખમાળામાં વરાહ મિહિર સુધીના વૈજ્ઞાનિકો વિષયે જાણ્યું. હવે આગળ વધીયે.

રમેશ મહેતા

॥ ઉદયો યો લંકાયા સોસ્તમયઃ સવિતુરેવ સિદ્ધપુરે
મધધ્યાહો યવકોટ્યાં રોમકવિષયેડર્ધરાત્રઃ સ્યાત્॥ -
આર્યભટ્ટીય ગોલપાદ – ૧૩

એટલે કે જ્યારે લંકામાં સૂર્યોદય થાય છે, ત્યારે સિદ્ધપુરમાં સૂર્યાસ્ત થી જાય છે. યવકોટિમાં મધ્યાહ તથા રોમક પ્રદેશમાં અર્ધરાત્રિ હોય છે.

આર્યભટ્ટઃ- આર્યભટ્ટનો જન્મ ઇ. સ. ૪૭૬માં કુસુમપુર (પટના) માં થયો હતો. તેઓ સમ્રાટ વિક્રમાદિત્ય દ્વિતીયના સમયમાં થયા હતા. તેમના શિષ્ય પ્રસિદ્ધ ખગોળવિદ વરાહ મિહિર હતા. આર્યભટ્ટે નાલંદા વિશ્વ વિદ્યાલયમાંથી શિક્ષા પ્રાપ્ત કરીને માત્ર ૨૩ વર્ષની આયુમાં 'આર્યભટ્ટીય' નામનો એક ગ્રંથ લખ્યો હતો. આ ગ્રંથની પ્રસિદ્ધિ અને સ્વિકૃતિને કારણે રાજા બુદ્ધ ગુપ્ત એમને નાલંદા વિશ્વ વિદ્યાલયના પ્રમુખ બનાવ્યા હતા. આર્યભટ્ટ પછી લગભગ ૮૭૫ ઇસ્વીમાં આર્યભટ્ટ દ્વિતીય થયા જેમણે જ્યોતિષ પર 'મહાસિદ્ધાંત' નામનો ગ્રંથ લખ્યો હતો. આર્યભટ્ટ દ્વિતીય ગણિત અને જ્યોતિષ બંને વિષયોના આચાર્ય હતા. તેઓ 'લઘુ આર્યભટ્ટ' નામે પણ પ્રસિદ્ધ હતા.

સહુ પહેલા આર્યભટ્ટે જ સૈદ્ધાન્તિક રુપે સિદ્ધ કર્યું હતું કે પૃથ્વી ગોળ છે અને એની પરિધિ અનુમાને ૨૪,૮૩૫ માઈલ છે તેમજ તે પોતાની ધુરા પર ફરે છે. જેના કારણે સૂર્ય અને ચન્દ્ર ગ્રહણ થાય છે.

આર્યભટ્ટના 'બૉલિસ સિદ્ધાંત' (સૂર્ય ચંદ્રમા ગ્રહણના સિદ્ધાંત), 'રોમક સિદ્ધાંત' અને 'સૂર્ય સિદ્ધાંત' વિશેષ રુપે મહત્તવપૂર્ણ છે. આર્યભટ્ટ દ્વારા નિશ્ચિત કરાયેલા 'વર્ષમાન' 'ટૉલમી'ની તુલનામાં વધારે વૈજ્ઞાનિક છે. આર્યભટ્ટના પ્રયાસોને કારણે જ ખગોળ વિજ્ઞાનને ગણિતથી અલગ કરવામાં આવ્યું છે.

બીજગણિતમાં પણ સહુથી જુનો ગ્રંથ આર્યભટ્ટનો છે. આર્યભટ્ટે દશાંશ પ્રણાલિનો વિકાસ કર્યો. એમણે સહુ પહેલા 'પાઈ'ની કિંમત નક્કી કરી અને એમણે જ સહુ પહેલા 'સાઈન' ના કોષ્ટક બનાવ્યા. ગદણિતના જટિલ પ્રશ્નોને સરળતાથી હલ કરવા માટે એમણે જ સમીકરણોની શોધ કરી, જે આખાય વિશ્વમાં પ્રસિદ્ધિ પામ્યા છે. એક પછી અગિયાર શૂન્ય જેવી સંખ્યાઓ બોલવા માટે એમણે કેટલીયે નવી પદ્ધતિઓને જન્મ આપ્યો. બીજગણિતમાં એમણે કેટલાયે સંશોધનો, સંવર્ધન કર્યા અને ગણિત જ્યોતિષના 'આર્ય સિદ્ધાંત' પ્રચારિત કર્યા.

વૃદ્ધાવસ્થામાં આર્યભટ્ટે 'આર્યભટ્ટ સિદ્ધાંત' નામના ગ્રંથની રચના કરી. આ ગ્રંથમાં એમણે રેખાગણિત, વર્ગમૂળ, ઘનમૂળ જેવી ગણિતની કેટલીયે વાતો ઉપરાંત ખગોળ સાશ્ત્રની ગણનાઓ અને અંતરિક્ષ સાથે સંબંધિત વાતોનો પણ સમાવેશ છે. આજે પણ 'હિન્દૂ પંચાગ' તૈયાર કરવા માટે એની મદદ લેવામાં આવે છે.

આર્યભટ્ટના સિદ્ધાંતના આધારે 'ભાસ્કર પ્રથમે' ટીકા લખી છે. ભાસ્કરના ૩ મહત્ત્વપૂર્ણ ગ્રંથ છે - 'મહા ભાસ્કર્ય', 'લઘુ ભાસ્કર્ય', અને 'ભાષ્ય'. ખગોળ અને ગણિતશાસ્ત્ર - આ બંને ક્ષેત્રમાં એમના મહત્ત્વપૂર્ણ યોગદાનની સ્મૃતિમાં ભારતના પ્રથમ ઉપગ્રહનું નામ 'આર્યભટ્ટ' રાખવામાં આવ્યું હતું.

આર્યભટ્ટે સૂર્યથી વિવિધ ગ્રહોના અંતર વિષયે પણ લખ્યું છે. એની સરખામણી અત્યારના માપ સાથે મળતી આવે છે. અત્યારે પૃથ્વી કરતા સૂર્યનું અંતર લગભગ ૧૫ કરોડ કિલોમિટર માનવામાં આવે છે. એને **A U (Astronomical unit)** કહે છે. આ અનુપાતના આધારે નિમ્ન સૂચી બને છે –

બુધ :- આર્યભટટ્ટનું માન ૦.૭૩ એયૂ.
વર્તમાન માન ૦.૩૮૭ એયૂ.
શુક્ર :- આર્યભટ્ટનું માન ૦.૭૨૫ એયૂ. –
વર્તમાન માન ૦.૭૨૩ એયૂ.
મંગળ :- આર્યભટ્ટનું માન ૧.૫૩૮ એયૂ.
વર્તમાન માન ૧.૫૨૩ એયૂ.
ગુરુ :- આર્યભટ્ટનું માન ૪.૧૬ એયૂ.
વર્તમાન માન ૪.૨૦ એયૂ.
શનિ :- આર્યભટ્ટનું માન ૯.૪૧ એયૂ.
વર્તમાન માન ૯.૪૫ એયૂ.

બ્રહ્મગુપ્ત (ઈ.સ. ૫૯૮માં જન્મ અને ૬૬૮માં મૃત્યુ) : બ્રહ્મગુપ્તને ભારતના સહુથી મોટા ગણિતજ્ઞોમાં માનવામાં આવે છે. તેઓ ખગોળ વિજ્ઞાનમાં ખૂબ રુચિ ધરાવતા હતા. પ્રસિદ્ધ જ્યોતિષી ભાસ્કરાચાર્યે એમને 'ગણકચક્ર ચૂડામણિ' કહીને એમના મૂળાંકોને પોતાના 'સિદ્ધાંત શિરોમણી'ના આધાર માન્યા હતા. ઉલ્લેખનીય છે કે ભાસ્કરાચારાચાર્ય દ્વિતીય ૧૧ મી સદીમાં થઈ ગયા હતા.

આચાર્ય બ્રહ્મગુપ્તનો જન્મ રાજસ્થાન રાજ્યના ભીનમાલ શહેરમાં ઈ.સ. ૫૯૮માં થયો હતો. બ્રહ્મગુપ્ત ઉજ્જૈનની અંતરિક્ષ ખગોળશાળાના મુખ્ય હતા અને એ દરમ્યાન એમણે બે વિશેષ ગ્રંથ લખ્યા – ૧, બ્રહ્મસ્ફુટસિદ્ધાંત (૬૨૮ ઈ.સ.) અને ખંડ-ખાદ્યક (૬૬૫ ઈ.સ.) ખલીફાઓના રાજ્યકાળમાં એના અનુવાદ અરબી ભાષામાં પણ કરાવવામાં આવ્યા હતા જેને અરબ દેશમાં 'અલ સિન્દ હિન્દ' અને 'અલ અર્કન્દ' કહેતા હતા. ભારતના 'સૂર્ય સિદ્ધાંત' પર આધારિત અરબમાં પણ જ્યોતિષ અને ખગોળનો પ્રચાર થયો હતો.

'બ્રહ્મસ્ફૂટ સિદ્ધાંત' ગ્રંથના સાડા ચાર અધ્યાય મૂળભત રીતે ગણિતને સમર્પિત છે. એમાં શૂન્યનો એક વિભિન્ન અંકના રૂપમાં ઉલ્લેખ કરવામાં આવ્યો છે. બ્રહ્મગુપ્તનું સહુથી મહત્તવપૂર્ણ યોગદાન ચક્રીય ચતુર્ભુજ પર છે. એમણે સિદ્ધ કર્યું છે કે ચક્રીય ચતુર્ભુજના વિકર્ણ પરસ્પર અવલમ્બિત હોય છે. બ્રહ્મગુપ્તે ચક્રીય ચતુર્ભજનું ક્ષેત્રફળ કાઢવાનું ચોક્કસ સૂત્ર એપ્રોક્ષીમેન્ટ ફોર્મ્યુલા તથા એક્ઝેટ ફોર્મ્યુલા પણ આપ્યા છે.

ભાસ્કરાચાર્ય પ્રથમ :- (૬૦૦ – ૮૦૦ ઈ.સ.) :- ઇતિહાસમાં બે ભાસ્કરાચાર્યની ચર્ચા જોવા મળે છે. ભાસ્કરાચાર્ય પ્રથમે જ હિન્દૂ દશાંશ પદ્ધતિમા લખવાની શરુઆત કરી હતી. એમણે આર્યભટ્ટની કૃતિઓ પર ટીકા લખીને એમના જ્ઞાનનો વિસ્તાર કર્યો છે.

હિન્દૂ દશાંશ પદ્ધતિ શું છે? :- ભારતે ગણના માટે ૯ અંકો તથા શૂન્યનો આવિષ્કાર કર્યો હતો. વર્તમાન સમયમાં આખો સંસાર ૧ થી લઈને ૯ અંક સુધીના અંકોના સહારે વિજ્ઞાન અને ગણિત આદિની ગણના કરે છે, એ ભારતીય અંક જ છે જેને હિન્દૂ દશાંશ પદ્ધતિ કહેવાય છે. પાછળથી એને 'હિન્દૂ-અરબી-અંક', 'હિન્દૂ અંક', 'અરબી અંક'ના નામથી ઓળખવામાં પણ આવ્યા. યૂનાનિઓ પણ આજ પદ્ધતિ અપનાવી હતી. અરબી ભાષામાં આ અંકોને હિન્દસા કહે છે. રોમનોની અંક પ્રણાલી જુદી હતી. ભારતીઓની પ્રતિસ્પર્ધાને કારણે તેઓ ભારતીઓની અંક પ્રણાલીનો સ્વીકાર કરવા નહોતા માંગતા પરંતુ ૧૨મી શતાબ્દીમાં એમને આ પ્રણાલી અપનાવવી પડી. આ અંકોને કારણે જ આધુનિક વિજ્ઞાન અને ઉદ્યોગમાં ક્રાન્તિ થઈ છે. અત્યારે હિન્દી કે અંગ્રેજીમાં જે અંકોનો પ્રયોગ આપણે કરી છીએ તેની શરુઆત ભારતમાં થઈ હતી.

ભાસ્કરાચાર્ય પ્રથમના આર્યભટ્ટીય પર એમણે ઈ.સ. ૬૨૯માં 'આર્યભટ્ટીયભાષ્ય' નામની ટીકા લખી જે સંસ્કૃત ગદ્યમાં લખાયેલું ગણિત અને ખગોળશાસ્ત્ર પરનું પહેલું પુસ્તક છે. આર્યભટ્ટની પરિપાટીમાં જ એમણે 'મહાભાસ્કરીય' અને 'લઘુભાસ્કરીય' નામના બે ખગોળશાસ્ત્રીય ગ્રંથ પણ લખ્યા છે.

ભાસ્કરાચાર્ય દ્વિતીય)જન્મ ૧૧૧૪ – મૃત્યુ ૧૧૭૯ ઈ.સ.):- ભાસ્કરાચાર્ય દ્વિતીયનો જન્મ ૧૧૧૪ ઈ.સ.માં થયો હતો. એમના પિતાનું નામ મહેશ્વરાચાર્ય હતું. તેઓ પણ એક ગણિતજ્ઞ અને ખગોળવિદ હતા. ભાસ્કરાચાર્યના પુત્ર લક્ષ્મીધર અને લક્ષ્મીધરના પુત્ર ગંગદેવ પણ પોતાના સમયના એક મહાન વિદ્વાન ગણાતા હતા.

ભાસ્કરાચાર્ય દ્વિતીયના જન્મસ્થાનના સંબંધમાં બે પ્રકારના મત પ્રવર્તે છે. કેટલાક વિદ્વાનોનું માનવું છે કે એમનો જન્મ મધ્યપ્રદેશના બિદૂર કે બિદાર નામના સ્થળે થયો હતો. જ્યારે કેટલાક વિદ્વાનોના મતાનુસાર એમનો જન્મ બીજાપુર નામના સ્થળે થયો હતો જે અત્યારે કર્ણાટક રાજ્યમાં આવેલું છે.

જો કે ભાસ્કરાચાર્યનું કર્મક્ષેત્ર ઉજ્જૈન (અવંતિકા) હતું. એમણે 'સિદ્ધાંત શિરોમણી' અને 'લીલાવતી' નામના બે મહત્ત્વપૂર્ણ ગ્રંથ લખ્યા છે જેનો કેટલીયે વિદેશી ભાષાઓમાં અનુવાદ થઈ ચુકયો છે. ઈ.સ. ૧૧૬૩માં એમણે 'કરણ કુતૂહલ' નામના ગ્રંથની રચના કરી. આ ગ્રંથમાં પણ મુખ્યત્તવં ખગોળ વિજ્ઞાન સંબંધી વિષયોની ચર્ચા કરવામાં ıવી છે. આ ગ્રંથમાં કહ્યું છે કે જ્યારે ચન્દ્રમા સૂર્યને ઢાંકી લે છે ત્યારે સૂર્યગ્રહણ અને પૃથ્વીની છાયા ચન્દ્રમાને ઢાં કી લે છે ત્યારે ચન્દ્રગ્રહણ થાય છે. ભાસ્કરાચાર્ય દ્વિતીયનું દેહાવસાન ઈ.સ. ૧૧૭૯માં ૬૫ વર્ષની આયુમાં થયુ હતું.

ऋषि બોધોત્સવ

૧૬ – ૧૭ – ૧૮ ફેબ્રુઆરી ૨૦૧૪ના
દિવસોમાં ऋषि દયાનન્દજીની પવિત્ર
જન્મભૂમિ ટંકારામાં ઉજ્વવામાં ıવશે.
ऋषिભક્તોના આવાસ - ભોજનાદિની
વ્યવસ્થા મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક
ટ્રસ્ટ તરફથી કરવામાં આવશે. ગુજરાતના
મહામહિમ રાજ્યપાલ
શ્રી ઓ. પી. કોહલી
ऋषि બોધપર્વના દિવસે વિશેષ રૂપે
ઉપસ્થિત રહીને શ્રદ્ધાંજલી આપશે
સહુ ऋषि ભક્તોને હાજર રહેવા શ્રદ્ધાભાવે
આમન્ત્રણ છે.
દર્શનાભિલાષી
શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ

समाचार दर्पण

आर्य समाज अमेरिका से प्रतिनिधि मंडल टंकारा में

ऋषि जन्म गृह एवम् जन्म कक्ष पर उपस्थित श्री देव महाजन एवम् श्री तिलक राज जी गुप्ता सपत्नीक एवम यज्ञ करते हुए।

टंकारा स्थित ऋषि जन्म भूमि पर निरन्तर देश-विदेश से ऋषि भक्त पधारते रहते हैं। इसी श्रृंखला में आर्य समाज मिचिगंज एवम् आर्यसमाज डिटरॉय अमेरिका से कुछ प्रतिनिधि ऋषि जन्मभूमि के अवलोकनार्थ पधारे। खोसला (आर्य समाज मिचिगंज) भी उपस्थित थे।

आप द्वारा अगुणतक पुस्तिका में टंकारा आगमन के संस्मरण लिखे की ऋषि की इस जन्मभूमि में पधार कर अत्याधिक गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं। पिछले वर्षो से इस वर्ष यहां काफी प्रगति दिखाई दी।

श्री गिरिश खोसला (वेद पथिक) एवम् प्रतिनिधि मंडल की महिलाएं। साथ में श्री आचार्य वचोनिधि आर्य (गांधीधाम)

अपने अल्पकालीन उपस्थिति में आपने सन्ध्याकालीन यज्ञ में गुरुकुल ब्रह्मचारियों के साथ अपनी उपस्थितियां अंकित की, ऋषि जन्म गृह एवम् टंकारा स्थित गऊशाला को भी देखा। टंकारा गुरुकुल के परिसर में भी आपने विद्यार्थियों से चर्चा की एवम् उनके आवासीय परिसर को भी देखा। साथ ही ऋषि भक्तों के लिए बनाए गए आवासीय कमरों का भी निरीक्षण किया। इस प्रतिनिधि मंडल में श्री देव महाजन (सुपुत्र स्व. श्री रामचन्द्र जी महाजन) अपनी बहन श्रीमती पुष्पा गुप्ता एवम् उनके पति श्री तिलक राज जी गुप्ता (उपप्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली), श्री गिरिश ब्रह्मचारियों का अनुशासन एवम् सफाई का विशेष ध्यान रखा जा रहा है। जन्मभूमि को विश्व दर्शनीय बनाने में आपका भविष्य में भी सहयोग रहेगा, ऐसा आश्वासन भी आप ने दिया। आर्य समाज मिचिगंज की ओर से 1001 यू.एस. डॉलर के चैक द्वारा योगदान दिया। साथ ही श्री देव महाजन की बहन श्रीमती पुष्पा गुप्ता जी ने भी 51000/- रूपये का योगदान दिया। इस प्रतिनिधि मंडल के साथ आर्य समाज गांधीधाम भुज गुजरात के मन्त्री आचार्य वाचोनिधि आर्य भी उपस्थित थे। हम टंकारा ट्रस्ट की ओर से सभी का धन्यवाद करते हैं।

लाला लाजपतराय बलिदान दिवस आयोजित

पंजाबी जनसेवा समिति द्वारा लाला लाजपतराय सर्किल पर लालाजी की प्रतिमा के पास आयोजित बलिदान दिवस पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंजाबी जनसेवा समिति के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा (आर्य समाज वाले) ने कहा कि आज के दिन को भारतीय स्वतत्रता संग्राम के इतिहास में बहुत बड़ा दिन बताया जिसके फलस्वरूप हमें आगे जाकर आजादी मिली और हमें अपना खोया गौरव प्राप्त हुआ। स्वराज और स्वदेश का जज्बा उन्हें महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज से मिला।

लाला लाजपतराय एक महान राष्ट्रभक्त, अग्रनायक, लोकनायक तथा महान व्यक्तित्व के धनी थे। हमें उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। उक्त विचार अमरोहा (उत्तर प्रदेश) से पधारे विख्यात वैदिक विद्वान डॉ. अशोक आर्य ने **बालाजी एज्युकेशनल इंस्टीट्यूट रंगबाड़ी** में लाला लाजपतराय बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए।

आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

गुजरात में पहली बार आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन हुआ। जिसमें जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर विवाह हों ऐसी भावना थी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि की भावना थी। गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेशचंद अग्रवाल थे। आर्य समाज आणंद गुजरात में हो रहा यह कार्य निकट भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम गुजरात में हो ऐसी मेरी कामना है। राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि अब तक हुए नौ सम्मेलनों के माध्यम से 385 परिवार आपस में जुड़े हैं जिनके रिश्ते संपन्न हुए हैं। सम्मेलन में गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, सौराष्ट्र व राजस्थान के प्रतिभागी सम्मिलित हुए। हंसमुख भाई ने कहा इस कार्य को अर्जुनदेव चड्ढा सेक्रेटरी निरंतर पूरी निष्ठा और लगन से कर रहे हैं। बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान रणजीत सिंह परमार ने कहा कि गुजरात प्रदेश के अन्य नगरों में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किये जाएं।

कार्यक्रम का संचालन हंसमुख भाई परमार एवं कोटा से पधारे रामप्रसाद याज्ञिक द्वारा किया गया। आर्य समाज आणंद के मन्त्री अशोक भाई पटेल ने सभी अतिथियों एवं आगन्तुकों व सहभागियों का आभार व्यक्त करते हुए यह कहा कि मुझे आज बेहद प्रसन्नता हो रही है कि प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने हम पर विश्वास करके गुजरात में प्रथम युवक-युवती परिचय सम्मेलन का अवसर हमें प्रदान किया।

आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

<u>आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई</u> के तत्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई द्वारा आयोजित आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर आर्य समाज सान्तक्रुज के प्रागंण में आयोजित हुआ। शिविर का प्रारम्भ श्रीमती अरूणा परेश पटेल, श्रीमती रजनी रवि सिंग एवं श्री लालचन्द आर्य उपप्रधान आर्य समाज सान्ताक्रुज के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ। शिविर में शारीरिक पाठ्यक्रम का संचालन सुव्रती आर्या, श्रीमती वीणा चतुर्वेदी वाराणसी एवं अंजलि गोस्वामी एवं सौरभ सिंह मुम्बई ने किया। आर्य वीर दल के बौद्धिकाध्यक्ष ब्र. अरूणकुमार ''आर्यवीर'' ने शिविर में बौद्धिक प्रशिक्षक के रूप में सेवाएं दी। शिविर में लगभग 40 कन्याओं ने भाग लिया। व्यस्त दिनचर्या में इन वीरांगनाओं को आसन-प्राणायाम, कूंग-फू कराटे, सर्वागसुन्दर व्यायाम, सूर्यनमस्कार आदि के व्यायाम तथा विभित्र खेल खिलाए गये। ईश्वर-जीव-प्रकृति, वेद, सृष्टि रचना, पंचमहायज्ञ, 16 संस्कार, वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था की जानकारी सरल ढंग से दी गई। बौद्धिक कक्षाओं में चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, तनाव मुक्ति, योग व व्यवहारिक जीवन में सफलता स्वस्थता आदि विषयों पर भी प्रकाश डाला। वरिष्ठ वर्ग में कु. डिम्पल पोकार ने प्रथम कु. सुकृति द्वितीय कु. विराली ने तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा कु. दिया मेहरा, कु. आयुषी कु. शिवानी, कु.अनु शुक्ला एवं कु. श्रद्धा आर्या ने भी विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी विशेष योग्यता प्रदर्शित की।

छात्रवृत्ति एवं अभिनन्दन समारोह

<u>मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नॉर्दन अमेरिकन जाट चैरिटी</u> द्वारा अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति समारोह का भव्य आयोजन गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। रामपाल शास्त्री एवं श्री चन्द्रदेव शास्त्री के संयुक्त संयोजन में तथा श्री वीरसेन मुखी (यू. एस.ए.) की अध्यक्षता में अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान करने का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में आर्यजगत् के छह विद्वान्-विदूषियों का सम्मान करते हुए उन्हें प्रशस्ति पत्र शाल एवं 11-11 हजार रूपये की सम्मानित राशि, जिसमें (1) पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी रामपत आर्य ईस्माईला रोहतक हरियाणा स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। (2) आचार्य वेदव्रत को स्व. श्री पण्डित ऋषि बलदेव तिवारी हॉलैण्ड स्मृति सम्मान से सम्मानित किया। (3) आचार्य श्रीमती निर्मला जी को श्रीमती लक्ष्मीदेवी, नौलथा, पानीपत, हरियाणा स्मृति सम्मान से सम्मानित किया। (4) डॉ. अमीता आर्या को स्व. श्रीमती शीलवती देवी बल्लभगढ़, भरतपुर, राजस्थान स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। (5) श्री चनद्रभूषण शास्त्री को स्व. श्री मास्टर रतनसिंह जी सुलतानपुर डबास, दिल्ली स्मृति सम्मान से सम्मानित किया। (6) स्नातिका डॉ. सुरभि आर्या को श्रीमती ईतवारिया रामदास तिवारी हॉलैण्ड स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल के पर्वतीय प्रवेश द्वार पर स्थित रामनगर जहाँ 1876 में ऋषिबद्ध पधारे थे। आर्य समाज का 89वाँ वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। यज्ञ के ब्रह्म व मुख्य वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के छाया प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार ने सत्यसनातन वैदिक धर्म के यज्ञ का मर्म बताते हुए वेद व यज्ञ दोनों के द्वारा जीवन में उन्नति (सुख) व अत्यधिक उत्कर्ष (शांति) प्राप्त करने के सूत्र सरलता के साथ बताए। करनाल से पधारी उपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या ने अपने सुमधुर भजन व उपदेशों से सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। वयोवृद्ध भजनोपदेशक पं. जयप्रकाश आर्य ने भी ओजस्वी वाणी में भजनोपदेश श्रवण कराए।

❑❑❑

वैदिक दर्शन प्रतिष्ठान मुम्बई का प्रथम वार्षिक सम्मेलन कच्छी कडवा पाटीदार समाज वाडी बोरिवली (पू.) में आयोजित किया गया, जिसमें यज्ञ के ब्रह्म आचार्य नामदेव आर्य धर्माचार्य आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई ने विशष यज्ञ सम्पन्न कराया।

प्रवक्ता के रूप में आचार्य शिवदत्त पाण्डेय तथा श्री वीरेन्द्र मिश्रा एवं योगेश आर्य ने ओजस्वी एवं सुमधुर भजनों से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। आचार्य नरेन्द्र शास्त्री को श्री टी.एस. भाल आई.पी.एस. संस्थापक रेड स्वस्तिक सोसा. मुम्बई एवं श्री लद्धाभाई पटेल ट्रस्टी महर्षि दयानन्द ट्रस्ट टंकारा के करकमलों से ''वैदिक वीर'' पुरस्कार द्वारा सम्मान करना रहा। कई संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी फूलहार, शाल, श्री फल आदि से सम्मान किया।

❑❑❑

आर्य समाज 'शहर' बड़ा बाजार सोनीपत के 98वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर चारदिवसीय कार्यक्रम में अजमेर से डॉ. धर्मवीर जी ने कथा के माध्यम से अपने सरल, सारगार्भित प्रवचनों द्वारा जनसामान्य को संदेश दिया। प. रामचन्द्र जी ने प्रेरक संस्मरण भी प्रस्तुत किये। युवा विद्वान डॉ. वरूण शर्मा जी ने अपने वक्तव्यों के माध्यम से अपने भोजन को सात्विकता की ओर मोड़ने की प्रेरणा दी। भजनोपदेशक पं. प्रदीप जी आर्य ने मनोहारी भजनोपदेशों द्वारा सन्देश दिया। इस पुनीत अवसर पर सुप्रसिद्ध विद्वान स्व. पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय जी रचित ग्रन्थ ''अद्वैतवाद'' का विमोचन भी हुआ।

❑❑❑

आर्य समाज जवाहर नगर, लुधियाना का वार्षिक उत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पं. बालकृष्ण जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में मंगलयज्ञ किया गया। उत्सव का कार्यक्रम प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि को चला। जिसमें यज्ञ के अतिरिक्त पं. उपेन्द्र जी के मनोहर भजन एवं डॉ. देवशर्मा जी वेदालंकार के उत्तम प्रवचन हुए। इस उत्सव में आर्य कॉलेज लुधियाना के पांच छात्रों को बी.ए. फाईनल की परीक्षा में संस्कृत विषय में अपने महाविद्यालय में प्रथम पांच स्थान प्राप्त करने पर श्रीमती सुमित्रा देवी जी बरसी द्वारा आरक्षित राशि से पारितोषिक एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

सम्मान समारोह

आर्य समाज हाथीखाना राजकोट के महामन्त्री श्री रणजीत सिंह परमार का स्वागत सम्मान पारिवारिक सत्संग में यज्ञोपरांत हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन सार्वदेशिक सभा द्वारा सिंगापुर थाइलैण्ड में रखा गया था। जिसमें गुजरात सौराष्ट्र राजकोट का गौरव और स्वामी दयानन्द सरस्वती के मिशन वेद प्रचार के लिए विदेशों में ओ३म ध्वज लहराया। आर्य समाज हाथीयाना के सभी हाजिर ट्रस्टियों तथा पंडितों ने भी फूल हार पहना कर स्वागत किया। मन्त्री श्री रणजीत सिंह परमार अपने सहकुटम्ब के साथ यज्ञ किया। इस समान समारोह में अति उत्साहित आर्य परिवारों को रणजीत सिंह परमार ने सभी का धन्यवाद किया।

निर्वाण दिवस सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना द्वारा महर्षि दयानन्द जी का 131वां निर्वाण दिवस मनाया गया । कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ के द्वारा प्रारंभ हुआ। मुख्य वक्ता स्वामी शोभानन्द जी रहे एवं श्रीश्रवण बत्रा जी रहे। कार्यक्रम को अपने भजनों से महर्षि दयानन्द के बलिदान की याद ताजा करने वालों में श्री राजेन्द्र बत्रा, जगदीश नारंग, बाला गंभीर, सुभाष अबरोहल विशेष सहयोगी वरिष्ठ उपप्रधान देवपाल आर्य, प्रधान आत्म प्रकाश जी, अरूण सूद, संजीव चढा, रमाकान्त महाजन, वेद प्रिय चावला, कुलदीप राय, चरणजीत पाहवा, के.सी. पासी, ओम प्रकाश गुप्ता आदि।

20वां स्थापना दिवस

महिला आर्य समाज मानसरोवर जयपुर ने अपना 20वां स्थापना दिवस सामवेद पारायण यज्ञ में आहुतियों के साथ मनाया। यज्ञ के ब्रह्मा होशंगाबाद (म.प्र.) के वैदिक आचार्य आनन्द पुरुषार्थी ने वैदिक मन्त्रों की सरल व्याख्या की। वेद पाठ जयपुर की बहनों श्रीमती सुमति व श्रुति शास्त्री द्वारा हुआ। इस दौरान मुजफ्फनगर के भजनोपदेशक पं. संदीप ने भजनोपदेशों से सरसना बिखेरी। महिला आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सरोज कालड़ा ने अन्य सदस्याओं के साथ दक्षिणा एवं वस्त्रादि से आचार्य, भजनोपदेशक, वेद पाठिनी एवं विद्वानों का सम्मान किया।

चुनाव समाचार

पुरोहित सभा लुधियाना, जवाहरनगर, लुधियाना

प्रधान- पं. बाल कृष्ण शास्त्री **मन्त्री**- श्री योगराज शास्त्री

कोषाध्यक्ष- श्री रमेश कुमार आर्य शास्त्री

आर्य समाज नरवा पीताम्बरपुर, बंगाल

प्रधान- श्री दिनेश मिश्र **मन्त्री**- श्री कृष्ण मोहन मिश्र

कोषाध्यक्ष- श्री रामसजीवन जायसवाल

व्यर्थ ही होता है
गुणों के बिना रूप, विनम्रता के बिना विद्या
उपयोग के बिना धन, साहस के बिना हथियार
भूख के बिना भोजन, होश के बिना जोश

अपमान और कड़वी दवा की गोलियां
निगल जाने के लिए होती हैं,
मुँह में रखकर चूसने के लिए नहीं।

टंकारा नगरी

टंकारा नगरी
का बड़ा ऊँचा स्थान है
ऋषिवर की जन्मभूमि
हीरों की खान है
ऋषि बोधोत्सव यज्ञ
की महिमा महान है
कल्याणकारी
आर्यवीरों की शान है।

टंकारा नगरी
ज्ञान की गंगा बहा रही
ऋषिवर के परम भक्तों
को अमृत पिला रही
वैदिक विचार शक्ति
का डंका बजा रही
पाखंड अन्धविश्वास
से मुक्ति दिला रही

संदेश ऋषिवर का
है संसार के लिए
बिगड़े हुये समाज
के उद्धार के लिए
वेदों के सत्य ज्ञान
के प्रचार के लिए
जीवन जुटा रहे
परोपकार के लिए

टंकारा नगरी
फूलती फलती रहे सदा।
ऋषि बोधोत्सव
परम्परा चलती रहे सदा
अमर ज्योति वेद की
जलती रहे सदा
निष्ठा प्रभु के प्यार में
ढलती रहे सदा

वेद प्रकाश शर्मा धारावाल,
103, अंकुर-बी, वशी फलिया, हालर,
वलसाड-396001, गुजरात

दीवान की चतुराई से मिला न्याय

सिखों के शासनकाल में एक सूबा था मुलतान। वहां के दीवान थे सावनमल। वे अत्यंत न्यायप्रिय थे। अतः मामलों का न्यायोचित निराकरण होता था और प्रजा उनसे संतुष्ट बनी रहती थी। एक बार दीवान साहब के पास एक विधवा महिला आई और उसने बताया कि पति के न रहने पर उसके रिश्तेदारों ने उसकी जमीन व कुएं पर जबरन अधिकार कर लिया है और उसे निरंतर प्रताड़ित कर रहे हैं। उसकी समस्या सुनकर दीवान साहब बोले-'बहन! मैं कल सुबह तुम्हारे कुएं पर स्नान करूंगा और तभी सारे मामले की छानबीन करूंगा। तुमने मेरी अदालत में शिकायत की है, बस यह किसी को मालूम मत होने देना।' दूसरे दिन दीवान साहब ने उस महिला के कुंए पर स्नान किया और फिर उसके रिश्तेदारों को बुलाकर कहा- 'इस कुएं में मेरी सोने की अंगूठी गिर गई है। मैं अपने नौकरों से उसकी खोजबीन कराता हूं। मिल गई तो ठीक अन्यथा उसका मूल्य पंद्रह हजार रूपए तुम्हें देना पड़ेगा।' यह सुनते ही उस महिला के रिश्तेदार घबरा एग। उन लोगों ने कहा-'माईबाप! यह कुआं हमारा नहीं है, हमारी रिश्तेदार एक विधवा महिला का है।' तब दीवान साहब ने महिला को बुलाकर पूछा- 'क्या यह कुआं तुम्हारा है?' महिला ने सहमति जताई। तब दीवान साहब ने अगला प्रश्न किया-'क्या ये तुम्हारे रिश्तेदार हैं?' उसके रिश्तेदार बोले-'यह कुआं और यह सारी खेती-बाड़ी इन्हीं की है। हम तो इनके कारिंदों के तौर पर यहाँ काम करते हैं। तब दीवान साहब बोले-'ठीक है।' दीवान साहब के समक्ष की गई स्वीकारोक्ति के बाद उस महिला के रिश्तेदारों ने कुएं व जमीन का कब्जा छोड़ दिया। वस्तुतः प्रतिद्वंद्वी को पराजित करने के लिए चतुराई की जरूरत होती है।

मस्त रहें

आज मैं सुखी नहीं हूँ! शरीर भी स्वस्थ नहीं है। शान्ति भी नहीं है। परिश्रम ही परिश्रम। मरने तक की भी फुरसत नहीं। परिवार में भी असन्तोष। धन की कमी। व्यापार भी ठीक नहीं चलता। बच्चों की पढ़ाई भी पसन्द स्कूल, कॉलेज में नहीं। घर में पूरे समय के नौकर, रसोइया, ड्राइवर आदि भी नहीं। घर भी नये तरीके से फरनिशड़ नहीं। गाड़ी भी दो ही है। बहुत ही मुश्किल है यह जीवन। हमारे सम्बन्धी, पड़ोसी, मित्र, आदि देखो क्या मौज से जी रहे हैं। आलीशान घर, आये दिन देश-विदेश घूमना, ड्राइवरों सहित बड़ी बड़ी गाड़ियां, रोज-रोज पार्टियां, महिलाएं भी हीरों के मूल्यवान गहने पहनें। क्या-क्या सुविधायें नहीं हैं। और हम...! हे भगवान! हम को भी...।

ऐसे वातावरण में हम कैसे प्रसन्न रहें? हममें संतोष, सुख, शान्ति सहनशीलता आदि गुणों का विकास कैसे हो? किसी भी स्थिति में मस्त कैसे रहें? हमारे कर्म, व्यवहार, सोच सुन्दर कैसे बनें? हमारा समय कैसे व्यवस्थित हो? परिवार में कैसे खुशियां बनी रहें? इच्छाएं कम कैसे हों? स्वस्थ कैसे रहें? क्रोध कम कैसे हो? चिन्ता कैसे मिटे? मेरी समझ से सिर्फ सत्संग पथ ही इन सब विचारों को बदल सकता है। शास्त्र श्रवण-पठन व भगवान की भक्ति में खूब समय दें। प्रभु के स्मरण से ही संसार का विस्मरण हो सकता है। आइये हम सब 'सत्संग पथ' पर तुरन्त चलने के कड़े नियम बनायें।

मैं भूल गया

' मैं भूल गया' I am sorry हमारा यह एक साधारण अभ्यास हो रहा है। कुछ बातों में हमें कुछ फरक नहीं पड़ता। परन्तु कहीं कहीं यह भूल जाने की आदत नुकसान पहुंचाती है। हम थोड़ा विचार करें कि हम इसे इतनी सरलता से क्यों लेते हैं? मेरी समझ से यह बड़ा दोष है। हमारे जीवन जीने में बड़ी रूकावट है। कई बार तो हमें याद नहीं रहता। कई बार अनसुना, अनदेखा करते हैं। बहुत आवश्यक बात होने पर भी कभी कभी भूल जाते हैं। मुझे लगता है कि हम असावधान रहते हैं। कुछ बातों को हम ऐसा पकड़कर रखते हैं कि भूलने ही नहीं देते। यह सिर्फ हमारे सोच का फरक है। इसे दोष समझने का प्रयास करें। यह इतना बड़ा दोष है, हम याद रखना चाहते हुए भी भूल गये। कभी कभी तो ध्यान से सुनते भी नहीं है और न ही गौर करते हैं कि हमें यह याद रखना है। आज का जीवन बहुत ही भागदौड़ का हो गया है इसलिए याद रखने का महत्त्व और ज्यादा है। कहीं से भी सीखने की जरूरत नहीं है कि कैसे याद रखें। हम स्वयं अपने अनुकूल याद रखने के तरीके ढूंढ कर अपना सकते हैं। हाँ! कम से कम सत्संग करना कभी भी न भूलें। उस प्रभु का ध्यान हमेशा बना रहे। उसे न भूलें। उसे कहने का कोई फरक नहीं पड़ता। आओ! सत्संग पथ पर चलते हुए ईश्वर स्मरण कभी न भूलें।

- साभारः मनोभाव पुस्तक

टंकारा बोधोत्सव यात्रा 16-18 फरवरी तक आयोजित

ऋषि जन्मभूमि, टंकारा में आगामी ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्रि) पर आने जाने की सुविधा पूर्व यात्रा का आयोजिन। 13 फरवरी, 2015 दोपहर से 20 फरवरी 2015 दोपहर तक किया गया है। आपकी टंकारा यात्रा सुखद एवं मंगलमय हो, यही हमारी परमात्मा से प्रार्थना है। ध्यान रहे आप महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली की यात्रा करने जा रहे हैं, आप अपने त्याग, सहयोग, उत्साह को इस काल में बनाये रखें। यात्रा रेल द्वारा होगी। खान-पान, ठहरने का प्रबन्ध उचित करने का पूरा प्रयत्न होगा, फिर भी आपके मन के अनुकूल न हो, कहीं कमी का अनुभव हो तो चर्चा का विषय न बनायें।

वरिष्ठ नागरिक जिनकी आयु 60 वर्ष से ऊपर है, गाड़ी में रियायत लेने वाले मूल आयु प्रमाण-पत्र साथ रखें। टंकारा में मौसम थोड़ी सर्दी-गर्मी का होगा, लगभग यहाँ के अप्रैल-मई की तरह। अतः हल्का-फुल्का बिस्तर, पहनने के कपड़े एवं केवल दैनिक उपयोग की सामग्री, पीने का पानी और दैनिक उपयोग में आने वाली दवाई साथ रखें। सामान उतना साथ लें जो आप स्वयं उठा सकें। अपने सामान की सुरक्षा स्वयं करें। कीमती सामान, धनराशि साथ न रखें। गर्म कपड़ों में आप स्वेटर, शॉल, ओढ़ने के लिए चद्दर साथ रखें। आर्य समाज सम्बन्धी धार्मिक भजन बोलने वाले भाई-बहन भजनों की कॉपी साथ रखें।

कार्यक्रमः ❑ दिनांक 13 फरवरी, 2015 (शुक्रवार)- हम DEL-Rajkot ऐक्सप्रैस (गाड़ी न. 19580) द्वारा रवाना होंगे। यह गाड़ी सराय रोहिल्ला से 1.10 बजे दोपहर को चलकर दिल्ली कैण्ट होते हुए जाती है। आप स्टेशन पर आधा घण्टा पहले पहुँचने की व्यवस्था करें। दोपहर और रात्रि का भोजन साथ लायें। ❑ दिनांक 14 फरवरी 2015 (शनिवार)-प्रातः 11 बजे तक आप राजकोट स्टेशन पर पहुंच जायेंगे। सुबह का नाश्ता गाड़ी में करेंगे। दोपहर का भोजन टंकारा में होगा। राजकोट से टंकारा हम टैक्सी/वेन द्वारा जायेंगे जोकि लगभग 1.5 घण्टे का सफर है। ❑ दिनांक 15-18 फरवरी, 2015 (रविवार से बुधवार)- महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली टंकारा में ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जायेगा। इस दौरान आवास तथा भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट द्वारा होगी। ❑ दिनांक 19 फरवरी, 2015 (बृहस्पतिवार)-टंकारा में प्रातः नाश्ता करके टैक्सी/वैन द्वारा राजकोट स्टेशन के लिए रवाना होंगे। राजकोट से राजकोट- DEE (गाड़ी न. 19579) द्वारा 12.15 बजे दोपहर को दिल्ली के लिए रवाना होंगे। दोपहर तथा रात्रि के भोजन आदि का प्रबन्ध गाड़ी में किया जाएगा। 20 फरवरी शुक्रवार को प्रातः का नाश्ता गाड़ी में होगा। ❑ दिनांक 20 फरवरी, 2015 (शुक्रवार)-ईश्वर का धन्यवाद करते हुए दिल्ली कैण्ट होते हुए प्रातः 10.15 बजे सराय रोहिला पहुँच जायेंगे।

विशेषः- ध्यान रहे कि टंकारा में ठहरने तथा रेलगाड़ी की बुकिंग का प्रबन्ध पहले से कराना होगा, इसलिए आप अपने नाम और राशि कार्यक्रम शुरु होने के कम से कम 70 दिन पहले अवश्य जमा करा दें। अगर कोई भाई-बहन किसी कारणवश न जा सके तो कृपया जाने से 7 दिन पूर्व हमें सूचित कर दें। कम से कम कटौती के बाद उसकी राशि लौटा दी जायेगी।

अनुमानित व्ययः- 3-Tier AC: साधारण-3600/- रूपये, वरिष्ठ नागरिक पुरुष-2600/- रूपये, वरिष्ठ नागरिक महिला-2300/-रूपये। यह व्यय के No-Profit No-Loss के आधार पर रखा गया है। इसमें खाने-पीने, ठहरने, गाड़ी का किराया (3-Tier AC) आदि सम्मिलित है। राशि कृपया 7 दिसम्बर 2014 तक अवश्य निम्न व्यक्तियों के पास जमा करा दें। रेलवे टिकट की बुकिंग में परेशानी को देखते हुए इच्छुक भाई-बहन अपनी राशि शीघ्रातिशीघ्र जमा करवा दें। हालात के अनुसार प्रोग्राम में थोड़ी-बहुत तबदीली हो सकती है।

किसी कारण 3-Tier AC में सीट न मिलने पर II Sleeper में बुकिंग करवा दी जाएगी। किराये में जो अन्तर होगा उसे लौटा दिया जायेगा। जो भाई-बहन 2-Tier AC में जाना चाहें, सीट मिलने पर उनकी बुकिंग करा दी जायेगी। किराये में जो अन्तर होगा वह उनको देना होगा।

विशेषः दिल्ली कैण्ट स्टेशन पर सभी गड़ियाँ रूकती हैं। वही से गाड़ी पकड़ सकते हैं और वहाँ उतर भी सकते हैं।

टंकारा प्रवास के दिनों में जो यात्री सोमनाथ जाना चाहें वह पूर्व सूचना देवें।

ऊषा अरोड़ा/रामचन्द अरोड़ा

सी-5 ए/216, जनकपुरी, नई दिल्ली, दूरभाषः 9910650690, 01125521814

टंकारा में बोधोत्सव 2015 का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार, मंगलवार, बुधवार 16, 17, 18 फरवरी 2015 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

टंकारा यात्रा 2015

सैरकर दुनियाँ की नादान जिन्दगानी फिर कहाँ। जिन्दगानी भी रही तो नौजवानी फिर कहाँ।।

।।यात्री बनकर आयें-मित्र बनकर जाएं।।

आर्यों का तीर्थ स्थल टंकारा चलो टंकारा, पोरबंदर, सोमनाथ, द्वारकापुरीधाम

टंकारा यात्रा अवधि 7 दिन

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं उप-कार्यालय आर्य समाज अनारकली मंदिर मार्ग एवं श्री रामनाथ सहगल जी के प्रेरणा से धर्मप्रेमी बहनों व भाइयों के लिए महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा यात्रा एवं द्वारकापुरीधाम तीर्थयात्रा का सुनहरी अवसर। 12.02.2015 को दिल्ली सराय रोहिला स्टेशन से चलेंगे व 19.02.2015 को वापस दिल्ली यात्रा समाप्त होगी। इस यात्रा में जाने के लिए यात्रियों से निवेदन है कि वे अपनी सीट यथाशीघ्र बुक करवा लें, जिससे कि रेलवे में कन्फर्म बुकिंग मिल सके। इस यात्रा में बस-रेल व आने-जाने का सभी खर्च शामिल है।

कार्यक्रम व दर्शनीय स्थल : ❑ 12.02.2015 सराय रोहिला से पोरबन्दर एक्सप्रैस द्वारा द्वारका के लिए प्रस्थान। ❑ 13.02.2015 भारत के चार पवित्र नगरों में से एक गोमती गंगा, नागेश्वर, द्वारकाधीश मन्दिर, श्रीकृष्ण महल। ❑ 14.02.2015 व भेंट द्वारका, गोपी तालाब। ❑ 15.02.2015 द्वारका से पोरबन्दर गांधीजी का जन्म स्थान, तारा मंडल, आर्य गुरुकुल, भारत माता मन्दिर। ❑ 16.02.2015 सोमनाथ का लाईट एण्ड साउंड शो, जहां श्री कृष्ण जी को तीर लगा था व प्रात: टंकारा के लिए प्रस्थान रात्रि विश्राम टंकारा में। ❑ 17.02.2015 शिवरात्रि बोध उत्सव शोभा यात्रा व महर्षि दयानन्द जन्म स्थान। ❑ 18.02.2015 प्रात: नाश्ते या लंच के पश्चात् टंकारा से दिल्ली के लिए प्रस्थान। ❑ 19.02.2015 दिल्ली स्टेशन पर यात्रा समाप्त।

नोट:- इन सभी स्थानों पर रहने व खाने की व्यवस्था होटल में होगी और टंकारा में रहने व खाने की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क है अगर किसी व्यक्ति के पास रेलवे का पास है तो वह **9500/-** देकर जा सकता है।

यात्री किराया-स्लीपर क्लास : 11400/-, 3 ए.सी. 13100/-, 2 ए.सी. 15200/-, ❒ सीनियर सिटिजन : 11100/-, 3 ए.सी. 11800/-, 2 ए.सी. 13100/-, ❒ महिला सीनियर सिटीजन 10900/-, 3 ए.सी. 11500/-, 2 ए.सी. 12900/-

यात्रा नियम : ❒ हमारी यात्रा में अकेली व वृद्ध महिलाएं भी यात्रा कर सकती हैं, क्योंकि हमारी यात्रा का माहौल घर परिवार जैसा होता है। ❒ सभी यात्रियों से निवेदन है कि वे अपना चैक/ड्राफ्ट **Arya Travel** अथवा विजय सचदेवा के नाम कोरियर या पोस्ट द्वारा भेज सकते हैं। ❒ इन यात्राओं में प्रत्येक कमरे में दो व्यक्ति ठहरेंगे। इस यात्रा में रहने व खाने की व्यवस्था **Hotel, Tourist Class, Non-Star, Neat & Clean** होगी। इस यात्रा में खाना शाकाहारी होगा। ❒ सीट बुक कराने के लिए ए.सी. के यात्री 4000/- अन्य यात्री 2000/- अग्रिम राशि के रूप में जमा करवा दें। इस यात्रा में एक बार टिकट बन जाने पर अगर यात्री टिकट रदद करवाता है तो 2000/- व जाने से दो दिन पहले रदद करवाने पर 4000/- प्रति व्यक्ति कटवाने होंगे। क्योंकि होटल व बस बुक हो चुकी होती है ❒ कहीं पर किसी मन्दिर, किले व नौकारोहण के समय कोई टिकट लेना होगा तो वे यात्री स्वयं लेंगे। ❒ कार्यक्रम में समय के अनुसार परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक का होगा। ❒ इस यात्रा में रेलवे की बुकिंग कम्प्यूटर द्वारा जो सीट नम्बर मिलेगा वही आपका सीट नम्बर होगा। ❒ कृपया सभी सीनियर सिटिजन यात्री अपना आयु का प्रमाण पत्र साथ रखें। ❒ इस यात्रा में दोपहर का भोजन कभी-कभी सम्भव नहीं हो पाता उस समय के लिए यात्री अपनी पसन्द की खाने-पीने की मन पसन्द वस्तुएं अपने पास रखें।

आर्या ट्रैवेल्स

अमित सचदेवा (मो. 9868095401, 9350064830), **विजय सचदेवा** (सुपुत्र स्व. श्री श्यामदास सचदेवा)

2613/9, चूना मंडी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, फोन : 011-45112521, मो. 09811171166

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अप्रिथधक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

पुस्तक समीक्षा

सत्य बाल महाभारत

सृष्टि की रचना के साथ ही मानव मात्र के जीवन-संचालन एवं कल्याण हेतु परमपिता परमेश्वर ने चार वेदों की रचना की। वेद के गूढ़ ज्ञान को सरलता से मानव मात्र तक पहुँचने के लिए ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि की रचना ऋषियों ने की। उक्त साहित्य वैदिक साहित्य के नाम से जाना जाता है। आगे चलकर यह वैदिक काव्यधारा आदि वाल्मीकि द्वारा अलौकिक साहित्यक के रूप में प्रवाहित की गई। वाल्मीकि कृत रामायण के पश्चात् वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत सर्वाधिक विशाल और महत्वपूर्ण रचना है।

महाभारत के व्यापक विषयों व इस ग्रंथ के भारतीय जनमानस में स्थान को दृष्टिगत रखकर विदुषी लेखिका 'टंकारा श्री' अरूणा सतीजा जी ने महाभारत की प्रेरणाप्रद कथा को सरलता व सहजता से प्रचारित व प्रसारित करने के उद्देश्य से यह लघु पुस्तिका लिखने का संकल्प किया और 18 पर्वों में विभक्त वृहद् महाभारत का परिचय भी प्रस्तुत कर दिया है। इसमें कुरूवंश का परिचय कुशलता के साथ दिया गया है। इस पुस्तिका में इन्होंने चक्रवर्ती सम्राट भरत से लेकर शांतनु व भीष्म का परिचय देकर काशीराज की कन्याओं के स्वयंवर का वर्णन करते हुए भीष्म द्वारा उनकी तीनों कन्याओं को बल पूर्वक उठा कर ले जाने का वर्णन बहुत ही कुशलता पूर्वक किया गया है। लेखिका महोदया ने प्रचलित मिथकों का तार्किक विश्लेषण कर सत्यान्वेषण का प्रयास किया है उक्त अन्वेषण के 'दौपदी के पाँच पति'' की प्रचलित मान्यता को उचित न मानकर, दौपदी को अर्जुन की ही पत्नी स्वीकार करना भी महत्वपूर्ण है। युधिष्ठिर के प्रति दुर्योधन के ईर्ष्याभाव को वैदिक शब्द 'हृदयाग्नि' देना भी उचित ही है। महाभारत युद्ध कौरवों की पराजय, पाण्डवों की विजय तथा उसके पश्चात् बलराम जी, श्री कृष्ण जी आदि के देहावसान तक का वर्णन अति प्रवीणता व कौशलता के साथ, मात्र प्रारम्भिक 15 पृष्ठों में कर दिया गया है। ऐसा लगता है कि कुछ छूटा भी नहीं। भला! मात्र 15 पृष्ठों में सम्पूर्ण महाभारत पूरी कैसे हो गई? यही लेखनकौशल है।

इस लघु पुस्तिका में महाभारत के माहात्म्य का वर्णन करते हुए मानव जीवन की यथार्थता को ग्रहण करने का संदेश दिया गया है और महाभारत ग्रन्थ की ऐतिहासिकता को सप्रमाण सिद्ध किया है। वस्तुतः महाभारत का प्राचीन नाम ''जय'' है, जिसमें मात्र 12000 (बारह हजार) श्लोक थे, परन्तु वर्तमान में 100000 (एक लाख) श्लोक हैं, इसलिए प्रक्षिप्तांश पर भी सप्रमाण प्रकाश डाला गया है। उक्त प्रकरण में सभी कल्पित कथाओं की समीक्षा विदुषी लेखिका ने सप्रमाण की है।

महाभारत आधारित यह लघु पुस्तक केवल कलेवर की दृष्टि से ही लघु है, अन्यथा पुस्तक में महाभारत जैसी महत्ता स्पष्ट होती है। पुस्तक पाठकों को कम समय में ही लघुप्रयास से ही महाभारत का पूरा ज्ञान व समालोचना दोनों का लाभ देगी।

– डॉ. विनय विद्यालंकार
राजकीय महाविद्यालय रामनगर (उत्तराखण्ड)

लेखिका श्रीमती अरूणा सतीजा (टंकारा श्री) 0141-2623732

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा 2015

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा के तत्वावधान में

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा-15 फरवरी से 21 फरवरी 2015

प्रस्थान: 15 फरवरी 2015 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हजरत एक्सप्रेस 4311 अप, 14 फरवरी 2015 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्य समाज मन्दिर, गंज स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद, दूरभाष-09410065832 **वापसी:** 21 फरवरी 2015 रात्रि अहमदाबाद मेल से देहली तक।

: परिभ्रमण कार्यक्रमः

पोरबन्दर, द्वारिका, सोमनाथ मंदिर, सावरमती आश्रम, अहमदाबाद, आदि दर्शनीय स्थल।

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास, परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था उप सभा द्वारा होगी।

आप 3000/- रूपये का ड्राफ्ट आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अमरोहा के नाम से खाते में भिजवा दें या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। राशि 3000/- 15 दिसम्बर 2014 तक प्राप्त हो जानी चाहिए। समुचित व्यवस्था में आपका सहयोग प्रार्थनीय।

यात्रियों को आवश्यक निर्देश : ❑ गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ❑ यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें। ❑ ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, मतदाता परिचय-पत्र, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलियां, शेविंग का सामान, तेल आदि। ❑ बहुमूल्य सामान साथ न रखें। ❑ अपनी औषधि साथ रखें। ❑ आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ❑ आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, सूचित करें। ❑ परिभ्रमण काल में आवास आर्यसमाज मन्दिर, पोरबन्दर, अहमदाबाद में रहेगा। ❑ कार्यक्रम संयोजक को व्यवस्था परिवर्तन का अधिकार है।

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं....

❑ श्रीराम गुप्ता-संरक्षक, ❑ हरिश्चन्द्र आर्य-अधिष्ठाता (05922-263412), ❑ डॉ. अशोक कुमार आर्य- प्रधान (09412139333), ❑ डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार-मंत्री (09412634672), ❑ ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य-कोषाध्यक्ष (09412493724), ❑ नरेन्द्र कांत गर्ग-संयोजक (09837809405)।

ऋषि बोधोत्सव 2015 पर प्रतियोगिताएं आयोजित

ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन आगामी ऋषि बोधोत्सव-2015 के उपलक्ष्य में टंकारा ट्रस्ट की ओर से युवाओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। जिसमें भाग लेकर युवाशक्ति अपनी प्रतिभा उजागर करें।

1. वॉलीबॉल (शूटिंग) टूर्नामेन्ट
(सौराष्ट्र प्रदेश के खिलाड़ियों के लिए)

❏ विजेता टीम को शील्ड प्रदान किया जाएगा। ❏ विजेता खिलाड़ियों, बेस्ट शूटर व बेस्ट नेटी को पुरस्कृत किया जायेगा। ❏ प्रवेशपत्र दिनांक 01 फरवरी-2015 तक स्वीकृत होंगे। ❏ यह टूर्नामेन्ट दिनांक 10 से 12 फरवरी 2015 के बीच में होगी।

2. महर्षि दयानन्द खेल महोत्सव
(टंकारा तहसील के विद्यार्थियों के लिए)

❏ कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थी भाई-बहन भाग ले सकेंगे जिसमें विभिन्न मैदानी खेलों की प्रतियोगिता होंगी, जिसकी जानकारी विद्यालयों को अलग से दी जायेगी। ❏ विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार व प्रमाणपत्र दिये जायेंगे।

3. प्रश्नमंच प्रतियोगिता
(सौराष्ट्र प्रदेश की शिक्षा संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिए)

❏ महर्षि दयानन्द के जीवन, कार्य, आर्यसमाज के सिद्धान्त और सामान्य ज्ञान पर प्रश्न पूछे जायेंगे। ❏ कक्षा 8 से 10 तक के छात्र भाग ले सकते हैं। ❏ एक विद्यालय से दो विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। ❏ भाग लेने के इच्छुक विद्यालय के प्राचार्य अपने विद्यार्थियों के नाम 10 फरवरी 2015 तक संयोजक को पहुंचा दे। ❏ प्रथम सिले शन राउन्ड (लिखित) दिनांक 16-02-2015 को प्रात: 10:00 बजे टंकारा ट्रस्ट परिसर में होगा। जिसमें प्रथम 14 स्थान प्राप्त करने वालों का अन्तिम राउन्ड (मौखिक) उसी दिन दोपहर 2:00 बजे ट्रस्ट परिसर में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव में मुख्यमंच पर होगा। ❏ संदर्भ के लिए महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र, प्राचीन वैदिक सिद्धान्त ज्ञान पुस्तकों का सहारा ले सकते हैं। ❏ प्रथम तीन विजेताओं को नकद पुरस्कार क्रमश: 500, 300, 200 प्रदान किया जायेगा, अन्यों को सांत्वना पुरस्कार दिया जायेगा। ❏ प्रत्येक को प्रमाणपत्र दिया जायेगा। ❏ बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने-जाने का किराया दिया जायेगा। ❏ भोजन-आवास की सुविधा नि:शुल्क रहेगी।

5. डॉ. मुमुक्षु गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार उस विद्यार्थी को दिया जायेगा जिसे योगदर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना नाम अपने गुरुकुल के आचार्य के माध्यम से टंकारा गुरुकुल के प्राचार्य/प्रतियोगिता संयोजक को भेज दें। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी को पांच हजार रूपये नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा।

❏ बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने-जाने का किराया दिया जायेगा। ❏ भोजन-आवास की सुविधा नि:शुल्क रहेगी। ❏ भाग लेने के लिए गुरुकुल के प्राचार्य अपने छात्रों के नाम दिनांक 10 फरवरी 2015 तक पहुंचा देवे। ❏ यह प्रतियोगिता ऋषि बोधोत्सव पर दिनांक 15-02-2015 दोपहर 2:00 से 5:00 के सत्र में होगी। अधिक जानकारी व नाम भेजने के लिए प्रतियोगिता संयोजक से सम्पर्क करें।

आचार्य रामदेव
(प्राचार्य म.द. उपदेशक महाविद्यालय)
टंकारा-363650 (जिला-मोरबी)
मो. 9913251448

हंसमुख परमार
प्रतियोगिता संयोजक
मो. 9879333348

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा
गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

(पृष्ठ 1 का शेष)

मास में 28 या 29 ही दिन क्यों? काल गणना में यदि कहीं कम-ज्यादा हो जाता है तो, न्यूनता रह जाती है तो उसकी पूर्ति अन्त में की जानी चाहिए, फरवरी मास यदि अन्त में रहता तो संवत्सर भर की न्यूनता को पूर्ण करने के लिए 28 या 29 दिन रखे गये हैं, ऐसा समझ में आता और फरवरी का अर्थ (प्रायश्चित) भी सार्थक होता। पर संवत्सर के बीच में अर्थात् दूसरे मास में न्यूनता की पूर्ति (Adjustment) करना कहां की बुद्धिमत्ता है? इससे स्पष्ट है कि जनवरी एवं फरवरी दोनों मास दिसम्बर के बाद ही जोड़ने योग्य हैं, न कि मार्च के आदि में।

भारतीय प्राचीन परम्परा के अनुसार नया संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आरम्भ होता है। जो कि मार्च के अन्त में या अप्रैल के आदि में आता रहता है। इससे ज्ञात होता है कि मार्च-25 से वर्ष को आरम्भ करने की रोमन परम्परा एवं भारतीय परम्परा में अत्यन्त समानता है। मार्च से संवत्सर को आरम्भ करना भारतीय संस्कृति का अनुकरण होता है। अतः अपने क्रैस्तव सम्प्रदाय को वैदिक संस्कृति से अलग करने के दुरुद्देश्य से रोमन सम्राट नूमा पोम्पिलियस् ने जनवरी और फरवरी मासों को मार्च से पूर्व जोड़ा है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई समुचित कारण नहीं है। उससे रोमन संवत्सर 304 दिन के स्थान पर (304+31+28=)363 दिन में रूपान्तरित हो गया। इनमें कुछ मास 30 दिन, कुछ 31 दिन तथा फरवरी मास 28 या 29 दिन के रूप में विभक्त हैं। जूलियस् सीजर और आगस्टस् सीजर के नामों वाले जुलाई एवं अगस्त मासों को क्रमशः 31-31 दिन के रूप में विभक्त किये गये। इस प्रकार यहां यह स्पष्ट हो जाता है कि संवत्सर का आद्य दिन, मासों का विभाग, परिमाण, नाम एवं क्रम ये सब स्वार्थवश वा अन्य दुरुद्देश्य के कारण अपने मतोन्माद से समाज पर बलात् थोपे गये हैं।

रोमन कैलैण्डर के बारह महिनों के नाम व परिणाम इस प्रकार थे Januarius (31) Februarius (28.29) Martius (31) Aprillis (30) Maius (31) Junius (30) Quinctilis (31) Sextilis (30) September (30) October (31) November (30) December (31)

ईसा से 44 वर्ष पूर्व जूलियस् सीजर (Julius Caesar) के सम्मान में Quinctilis मास के नाम को Julius (July) के रूप में परिवर्तित किया गया। ईसा से आठ वर्ष पूर्व सम्राट् अगस्टस् सीजन ने स्वयं ही Sextilis मास के नाम को अपने नाम से अर्थात् Augustus (August) नाम से प्रसिद्ध कर दिया। पहले Sextilis मास में तीस ही दिन थे, पर अपने नामवाला मास जूलियस् सीजर के नाम से प्रसिद्ध मास Julius (July) के समान रहना चाहिए, ऐसा विचार कर तीस दिन के बदले में August को एकत्तीस दिन का बना दिया। इस एक दिन के आधिक्य को फिब्रवरी मास में एक दिन घटाकर 29 दिन के बदले में 28 दिन कर दिया। इस कैलेण्डर के कुछ दोषों को दूर कर 'पोप ग्रेगरी' ने एक विनूतन कैलेण्डर को प्रकाशित किया। यही कैलेण्डर सन् 1582 से कुछ प्रमुख देशों में अपनाया गया। यह ग्रेगारियन् कैलेण्डर किस-किस देश में कब-कब अपनाया गया था, इसका स्पष्टीकरण निम्नप्रकार है-

संवत्सर (ईस्वी सन्) देशों के नाम-1582-फ्रांस, इटली, लक्सेम्बर्ग पुर्तगाल, स्पेन। 1583-1812-स्विट्जलैंण्ड। 1584-जर्मन (रोमन कैथोलिक), बेल्जियम और नेदलैंण्ड के कुछ प्रान्तों में। 1587-हांगरी। 1699-1700-डेन्मार्क, डच्, जर्मन प्रोटेस्टण्ट। 1776-जर्मनी। 1752-ब्रिटेन, अमेरिका। 1753-स्वेडेन। 1873, 1874-जापान, मिस्त्र। 1912-1917-अल्बानिया, बुल्गारिया, चीन, एस्तोनिया, लातविया, लिथुअनिया, रोमनिया, तुर्की, युगोस्लाविया। 1918, 1923-सोवियत रूप, ग्रीस।

भूगोल और खगोल के विज्ञान से, प्राकृतिक घटनाओं से, सूर्य-चन्द्र-ग्रह-नक्षत्रों की स्थितियों से ग्रेगारियन कैलेण्डर के मासों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं दीखता। इसलिए जनवरी और फरवरी मासों को मार्च से पूर्व जोड़ने पर भी जनवरी-1 को संवत्सरादिके रूप में लोगों ने नहीं स्वीकारा। मार्च 25 को ही संवत्सरादि अर्थात् नये वर्ष के रूप में मानते हुए आये हैं। सन् 1582 से जनवरी 1 नये वर्ष के रूप में व्यवहार में आया, उससे पूर्व नहीं।

जनवरी-1 को नये वर्ष के रूप में मनाने की पद्धति को अंग्रेजियों ने भारत में भी सन् 1752 में आरम्भ करवाया। भारतीय परम्परा को नष्ट करने के लिए बहुत से षडयन्त्र करने पर भी वित्तसंवत्सर (Financial Year) और शिक्षा संवत्सर (Educational Year) आज तक अप्रैल-1 से ही आरम्भ होते हैं। इन्हें बदल नहीं पाये। ये दोनों ही संवत्सर भारतीय नये संवत्सर के अनुकूल हैं, साथ में वैज्ञानिक और बुद्धिसंगत हैं। पर अप्रैल-1 का मूर्खदिवस (Foolish Day) के रूप में प्रचलन कराया गया। इसका कारण यह है कि-सन् 1582 में फ्रांस के दसवें राजा 'चार्ल्स' ने अपने देश में जनवरी-1 को संवत्सरादि के रूप में घोषणा की, पर वहां की जनता राजाज्ञा को स्वीकार न कर अप्रैल-1 को ही नया संवत्सर मनाती रही। इससे क्रुद्ध चार्ल्स ने राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाले सभी को मूर्ख घोषित किया। उसके बाद धीरे-धीरे वहाँ की जनता को जनवरी-1 को संवत्सरादि के रूप में मानना पड़ा। इस सफलता को देखकर, पुनः भविष्य में कोई भी अप्रैल-1 को नया वर्ष न मनावें, इस उद्देश्य से चार्ल्स ने अप्रैल-1 को मूर्खदिवस के रूप में घोषणा करवाई। हम भारतीय इस सच्चाई को न जानते हुए जन्मान्धों के समान भेड़ चाल से उनका अनुकरण करते जा रहे हैं और विना किसी राजाज्ञा के ही खुशी से, आनन्द से दूसरे को अप्रैल-फूल (मूर्ख) बनाते जा रहे हैं।

दिन का प्रारम्भ आधी रात को नहीं, अपितु सूर्योदय से तीन घण्टे पूर्व (3 A.M.) होता है। उसी समय पशु-पक्षी आदि जागकर अपने-अपने मधुर ध्वनियों से सभी दिशाओं को मनोहर एवं श्रव्य बनाते हैं। उसी समय को ब्रह्ममुहूर्त कहते हैं। उसी समय सम्पूर्ण संसार में सक्रियता, क्रियाशीलता दिखाई देती है। प्राणियों के शरीरों में भी उसी समय एक विशिष्ट चैतन्य का संचार होता है। हम सुनते आये हैं और आयुर्वेदादि शास्त्र भी कहते हैं कि सभी मनुष्यों को इसी ब्रह्ममुहूर्त में जागना चाहिए। इस प्रकार यह जड़ जगत्, पशु-पक्षी, मनुष्यों का अनुभव एवं शास्त्र यह प्रकट कर रहें कि ब्रह्ममुहूर्त से दिन आरम्भ होता है। पर इसके विपरीत आधी रात को दिन का आरम्भ वा संवत्सर का आरम्भ मानना क्या अज्ञानता का प्रतीक नहीं है? मेधा सम्पन्न भारतीयों को पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण कर पशु-पक्षियों से हीन अज्ञानियों के जैसा व्यवहार करना शोभा नहीं देता। अग्नि व दीपकों को प्रज्वलित कर प्रकाश से प्रसन्न होकर अलौकिक आनन्दानुभूति करने की संस्कृति है हमारी। पर दीपकों को बुझाकर अन्धकार से प्रीति करने की सभ्यता है पाश्चात्यों की। चारों ओर घनघोर अन्धकार से आच्छादित आधी रात को मनुष्य ही नहीं, अपितु पशु-पक्षी आदि भी गहरी नींद में रहते हैं। कहीं भी चेतनता, क्रियाशीलता नहीं दिखती। ऐसे समय में वर्ष व दिन का आरम्भ मानना अज्ञान एवं विवेकता है, विज्ञान के विरूद्ध है। मध्यरात्रि से दिन आरम्भ होने का वर्णन किसी भी शास्त्र में नहीं है। अतः भारतमाता के हे वीर सपूतों जागो, सचेत हो जाओ, विचार करो।

वार्षिकोत्सव पर उपस्थित सन्यासीवृन्द का स्वागत एवम अभिनन्दन करते श्री पूनम सूरी जी

बच्चों ने बहुत ही प्रभावित ढंग से प्रस्तुत किया।

तदुपरान्त आर्ष गुरुकुल नोएडा के आचार्य डॉ. जयेन्द्र शास्त्री जी ने भोग और त्याग की संस्कृति पर अपने विचार रखे। इसी अवसर पर आपने स्वामी दयानन्द का गुणगान करते हुए स्वरचित कविता को स-स्वर गा कर सुनाया जिससे उपस्थित जनसमूह अत्यधिक प्रभावित हुआ। अपराह्न सहभोज के उपरान्त यह सत्र समाप्त हुआ।

संध्याकालीन सत्र में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल जयपुर से पधारे श्री राधा बल्लभ सक्सैना जी ने मधुर भजनों द्वारा उपस्थित

श्रीमती निशा पेश्नि मन्त्री (दिल्ली सभा)
एवम् डॉ. आचार्य जयेन्द्र शास्त्री

वाषिकोत्सव पर जिन बच्चों ने भाग लिया का सामूहिक चित्र
श्री अजय सूरी एवम् ब्रि. अशोक अधलखा

जन समूह को आनन्दित किया। तदुपरान्त आर्य समाज के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. महेश वेदालंकार जी ने गीता संदेश पर सरल शब्दों में रूचिकर वक्तत्व दिया। उपस्थित जनसमूह पूर्ण रूप से शान्त हो इस गीता सन्देश को सुनते रहे। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री पूनम सूरी जी ने डॉ. महेश वेदालंकार जी को शाल ओढ़ाकर सम्मानित भी किया।

रविवार 30 नवम्बर 2014 को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। तदुपरान्त स्कूली बच्चों का कार्यक्रम अपराहन 11 बजे तक चलता रहा। जिसमें डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल विकासपुरी के बच्चों ने अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसे श्री पूनम सूरी जी ने प्रधानाचार्य श्रीमती चित्रा नाकरा जी को पुष्प भेंट कर उन द्वारा चरित्र निर्माण क्षेत्र में किए गए कार्यों के लिए आशीर्वाद दिया। वार्षिकोत्सव के समापन सत्र में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल अशोक विहार के श्री एस.के. शर्मा जी द्वारा मधुर भजनों का कार्यक्रम रहा और विशेष प्रवचन डॉ. वीरेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने अज्ञानता मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप विषय पर रखा। इस अवसर पर डॉ. वीरेन्द्र कुमार जी को आर्य समाज के प्रधान श्री पूनम सूरी जी द्वारा शाल ओढ़ा कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर प्रधान श्री पूनम सूरी जी द्वारा उपस्थित जनसमूह को प्रेरणादायक आशीर्वचनों द्वारा सम्बोधित किया गया। अन्त में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा दिल्ली की मन्त्राणी श्रीमती निशा पेश्नीन जी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। तीन दिन के इस सफल कार्यक्रम का कुशल संयोजन आर्य समाज के मन्त्री ब्रि. अशोक अधलखा जी ने किया। यह कार्यक्रम कभी भी सफल न हो पाता अगर प्रधान श्री पूनम सूरी जी कार्यकारिणी प्रधान श्री अजय सूरी जी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री एस.के. शर्मा जी, सहमन्त्री श्री अजय सहगल, श्री सत्यपाल जी, श्रीमती स्नेह मोहन एवम् आर्य समाज के धर्माचार्य एवम् सभी कर्मचारियों का सहयोग न होता। अन्त में शान्ति पाठ के बाद सहभोज हुआ।

सभा का संयोजन करते ब्रि. अशोक अधलखा जी एवम् सभा मन्त्री श्री एस.के. शर्मा
सपत्नीक का अभिनन्दन श्री पूनम सूरी जी द्वारा

एक साल में 50 मित्र
बनाना आम बात है
50 साल तक एक ही मित्र से
मित्रता निभाना खास बात है

टंकारा समाचार जनवरी, 2015
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-01-2015
R N I No 68339/98 प्रकाशन तिथिः 23 12 2014

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला राजकोट- 363650 (गुजरात) दूरभाषः (02822) 287756

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 16, 17, 18 फरवरी 2015 (सोमवार, मंगलवार, बुधवार) को महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ : दिनांक 11 फरवरी 2015 से 17 फरवरी 2015 तक

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर), श्री कुलदीप शास्त्री सहपत्नीक (बिजनौर)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : श्री पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट)

बोधोत्सव

दिनांक 17.02.2015 मंगलवार

मुख्य अतिथिः महामहिम श्री ओमप्रकाश कोहली जी (गुजरात के राज्यपाल)

अध्यक्षता श्रद्धांजलि सभाः श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात)

विशिष्ट अतिथिः श्री एच. आर. गन्धार (प्रशासक एवम् सलाहकार डी.ए.वी. विश्वविद्यालय, जालन्धर)

कार्यक्रम के आमन्त्रित विद्वान्ः स्वामी आर्येशानन्द जी (माउन्ट आबू), **स्वामी शान्तानन्द जी** (भवानीपुर भुज), **डॉ. विनय विद्यालंकार** (रामनगर, नैनीताल), **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (कृषि राज्यमन्त्री भारत सरकार), **जयेन्ती भाई कबाड़िया** (ग्रामीण विकास मन्त्री, गुजरात), **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (अध्यक्ष गौ सेवा सदन गुजरात), **श्री बामनभाई मेटालिया** (विधायक टंकारा), **श्री कान्ति भाई अमरतिया** (विधायक मौरबी), **श्री एस के शर्मा** (मन्त्री, प्रादेशिक सभा), **श्री गिरीश खोसला** (यू.एस.ए), **श्री वाचोनिधि आर्य** (गांधीधाम) **एवं इसके अतिरिक्त देश-विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।**

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज, शिक्षण संस्थान तथा सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भिजवाने की कृपा करें और ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनें। बाहर से आने वाले ऋषि भक्त ऋतु अनुकूल हल्का बिस्तर साथ लावें और आने की पूर्व सूचना टंकारा अथवा दिल्ली कार्यालय श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्यसमाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 को अवश्य देवें (15 जनवरी 2015 तक), जिससे व्यवस्था बनाई जा सके। टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

आप दानराशि सीधे पंजाब एण्ड सिन्ध बैंक कालका जी, नई दिल्ली में खाता संख्या 09481000003488 IFSC-PSIB0020948 में भी जमा करा सकते हैं। कृपया जमा राशि की सूचना दिल्ली कार्यालय को जमा रसीद, अपने पूरे पते सहित अवश्य भेजें ताकि दान की रसीद भिजवानें में सुविधा हो।

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	(उप-प्रधाना)	मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक-रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइलः 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय